कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार
Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 8 दिसम्बर 2025 वर्ष-80 अंक - 15 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ -16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानियां

कृषि वर्ष 2026 : समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश के लिए

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का व्यापक रोडमैप

भोपाल (कृषक जगत)। कृषि क्षेत्र को लाभकारी, आधुनिक और रोजगार-उन्मुख बनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वर्ष 2026 को 'समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश' की टैगलाइन के साथ कृषि वर्ष के रूप में मनाए जाने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने बताया कि कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में नवाचार, तकनीक, प्रसंस्करण, प्राकृतिक खेती और बाजार से जुड़ाव को बढ़ावा देकर किसानों की शुद्ध आय में स्थायी वृद्धि करना सरकार की प्राथमिकता है।

विधानसभा की समिति कक्ष में आयोजित बैठक में मुख्यमंत्री ने कृषि वर्ष के लिए विभिन्न विभागों के साथ विस्तृत समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि खेती-किसानी को पारंपरिक दायरे से बाहर निकालकर इसे तकनीक-आधारित, टिकाऊ और युवाओं के लिए रोजगार सृजित करने वाला क्षेत्र बनाया जाए।

कृषि वर्ष के लिए मासिक कार्ययोजना तैयार

बैठक में कृषि वर्ष 2026 का मासिक कैलेंडर प्रस्तुत किया गया, जिसके तहत राज्य से लेकर जिला और विकासखंड स्तर पर मेले, महोत्सव, प्रशिक्षण, वैज्ञानिक गतिविधियाँ और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह निर्देश वर्ष 2026 के कृषि वर्ष मनाने के संबंध में विधानसभा के समिति के कक्ष में आयोजित बैठक में दिए। बैठक में कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना, पशुपालन एवं डेयरी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल, पूर्व मंत्री श्री गोपाल भार्गव, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्य फोकस प्राकृतिक खेती, मृदा स्वास्थ्य परीक्षण, आधुनिक कृषि तकनीक, उर्वरकों के संतुलित उपयोग, कृषि मंडियों के आधुनिकीकरण, उद्यानिकी, खाद्य प्रसंस्करण, मत्स्य, पशुपालन और निर्यातोन्मुख कृषि पर रहेगा।

किसानों को विदेश यात्रा

किसानों को वैश्विक नवाचारों से अवगत कराने के लिए विभिन्न देशों का अध्ययन भ्रमण भी प्रस्तावित है।

एक बीघा में एक लाख कमाने वाले किसान होंगे सम्मानित

कृषि विभाग की समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'लखपति दीदी' की तर्ज पर 'लखपति बीघा' मॉडल लॉन्च करने के निर्देश दिए। इसके तहत वे किसान, जो एक बीघा से एक लाख रुपये की आमदनी प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें राज्य स्तर पर सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने ग्राम स्तर पर उद्यानिकी फसलों को बढ़ावा देने, उच्च तकनीकी खेती अपनाने और उर्वरकों की आसान उपलब्धता के लिए डिजिटल प्रबंधन प्रणाली लागू करने के निर्देश भी दिए।

तीन वर्ष की बड़ी कार्ययोजना

सरकार की तीन वर्षीय कृषि कार्ययोजना में सभी 363 नगरीय निकायों में साप्ताहिक जैविक/प्राकृतिक हाट बाजार, पर ड्रॉप-मोर क्रॉप के तहत 3.25 लाख हे. में माइक्रो-इरिगेशन विस्तार, 2027-28 तक पराली जलाने में 80% कमी, सभी मंडियों का हाइटेक आधुनिकीकरण, दलहन-तिलहन क्षेत्र का विस्तार और अनुसंधान को खेत तक पहुँचाने लैब-टू-फार्म मॉडल लागू करना शामिल है।

रबी फसलों की बुवाई में तेजी : कुल रकबा 393 लाख हेक्टेयर के पार

गेहूं में रिकॉर्ड 17% की बढ़त

नई दिल्ली (कृषक जगत)। कृषि मंत्रालय ने गत 28 नवंबर 2025 तक हुई रबी फसलों की बुवाई के ताजा आंकड़े जारी किए हैं। आंकड़ों के अनुसार, इस वर्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 393.07 लाख हेक्टेयर में हुई, जो पिछले वर्ष 357.73 लाख हेक्टेयर थी। इसका मतलब है कि 2025-26 में कुल बुवाई क्षेत्र में 35.33 लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी हुई है।

गेहूं और चावल

गेहूं की बुवाई में सबसे अधिक बढ़त देखने को मिली है। इस वर्ष 187.37 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया, जबकि पिछले वर्ष यह आंकड़ा 160.26 लाख हेक्टेयर था, यानी 27.11 लाख हेक्टेयर की वृद्धि। वहीं, चावल की बुवाई भी बढ़कर 9.10 लाख हेक्टेयर हो गई, जो पिछले वर्ष 8.45 लाख हेक्टेयर थी।

दालें

दालों की कुल बुवाई इस वर्ष 87.01 लाख हेक्टेयर रही, जो पिछले वर्ष 85.06 लाख हेक्टेयर थी। इसमें मुख्य रूप से चने की बुवाई 62.49 लाख हेक्टेयर तक बढ़ी, मसूर 11.42 लाख हेक्टेयर, जबकि मटर और कुलथी की दाल में हल्की कमी दर्ज की गई। उड़द और मूंग की बुवाई में मामूली बढ़त हुई है, वहीं खेसारी और अन्य दालों की बुवाई में थोड़ी गिरावट देखने को मिली।

श्री अन्न एवं मोटे अनाज

श्री अन्न और मोटे अनाज की कुल बुवाई 29.06 लाख हेक्टेयर रही। इसमें ज्वार 14.98 लाख हेक्टेयर, मक्का 8.76 लाख हेक्टेयर और जौ 4.60 लाख हेक्टेयर बोया गया। छोटे बाजरे और रागी में मामूली बढ़ोतरी हुई है।

तिलहन

तिलहन की कुल बुवाई में भी वृद्धि दर्ज की गई है। इस वर्ष 80.53 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में तिलहन बोया गया, जो पिछले वर्ष 77.38 लाख हेक्टेयर था। इसमें मुख्य रूप से रेपसीड और सरसों की बुवाई में 4.14 लाख हेक्टेयर की बढ़त हुई। इसके अलावा कुसुम और सूरजमुखी में भी बढ़ोतरी रही, जबकि मूंगफली और अलसी की बुवाई में कुछ कमी आई।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई 28 नवम्बर 2025 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**187.37**	**160.26**
चावल	**42.93**	**9.1**	**8.45**
दालें	**140.42**	**87.01**	**85.06**
चना	100.99	62.49	60.13
मसूर	15.13	11.42	10.44
मोटे अनाज	**55.33**	**29.06**	**26.58**
ज्वार	24.62	14.98	14.43
मक्का	23.61	8.76	7.25
तिलहन	**86.78**	**80.53**	**77.38**
सरसों	79.17	77.06	72.92
मूंगफली	3.69	1.35	1.94
अलसी	1.93	1.15	1.79
कुल	**637.81**	**393.07**	**357.73**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।

स्रोत : कृषि मंत्रालय

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

केंद्रीय कृषि मंत्री ने दिल्ली में किया सरस आजीविका फूड फेस्टिवल का शुभारंभ

लखपति दीदियों के पास अनंत शक्तियों का भंडार : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली स्थित सुंदर नर्सरी, भारत स्काउट्स एंड गाइड्स मार्ग, निजामुद्दीन पर आयोजित सरस आजीविका फूड फेस्टिवल 2025 का शुभारंभ किया। इस अवसर पर केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी भी उपस्थित थीं। इस मौके पर श्री चौहान ने कहा- सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते, मेरे लिए नारायणी हर नारी है, 'नारी तू नारायणी'। शिवराज सिंह ने कहा है कि लखपति बहनों ने तो यह सिद्ध कर दिया है कि वो अनंत शक्तियों की भंडार हैं, सचमुच में बहनों ने अपनी कर्मठता से प्रगति, विकास और समृद्धि की एक नई गाथा लिखी है। आज लखपति दीदियां 25 राज्यों से आई हैं और उनमें से कई दीदियां ऐसी हैं, जो अपने गुणों, मेहनत और परिश्रम की वजह से आज पूरे देश को रास्ता दिखा रही हैं।

फूड फेस्टिवल में 25 राज्यों से आई महिलाएं 62 स्टॉलों के माध्यम से 500 से अधिक पारंपरिक और स्वादिष्ट व्यंजन परोस रही हैं। फेस्टिवल में हरियाणा, अरुणाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, केरल, असम, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा, गुजरात सहित कई राज्यों की भागीदारी से देश की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता की झलक मिल रही है। फेस्टिवल ग्रामीण भारत की समृद्ध परंपराओं, आत्मनिर्भरता और महिला नेतृत्व वाली आजीविका मॉडल को सामने लाने वाला प्रभावी माध्यम बन गया है।

किसान ऑफ़ इंडिया सम्मान 2025

नवाचार, टिकाऊ खेती और नए दौर की कृषि को मिला मंच

नई दिल्ली (कृषक जगत)। राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित किसान ऑफ़ इंडिया सम्मान 2025 के पहले संस्करण में देशभर के प्रगतिशील किसानों, कृषि नवाचारों और नई तकनीकों को एक साझा मंच मिला। कार्यक्रम में टिकाऊ खेती, आधुनिक तकनीक और ग्रामीण उद्यमिता के प्रभावी उदाहरण सामने आए।

जोधपुर, राजस्थान के उद्यमी अमित सोनी ने साझा किया कि किस तरह उनके मिलेट-आधारित बेकरी उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। उनका बाजरे का चॉकलेट ट्रफल केक संसद में कटा और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा सराहा गया। वर्मीकम्पोस्टिंग को लेकर लोकप्रिय हुई सना खान, जिनकी पहल का उल्लेख प्रधानमंत्री ने मन की बात में किया था, ने युवाओं से कृषि अपनाने और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने का आग्रह किया। जयपुर के प्रगतिशील किसान खेमा राम चौधरी, जिन्होंने सूखी भूमि पर हाइड्रोपोनिक NFT सिस्टम और पॉलीहाउस खेती को अपनाया है, सात सम्मानित किसानों में से एक थे।

डॉ. मांगी लाल जाट, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) और महानिदेशक, ICAR, ने वीडियो संदेश में कहा कि ये किसान भारत की कृषि के लिए नए मार्गदर्शक बन रहे हैं।

डॉ. राजर्षि रॉय बर्मन, अतिरिक्त महानिदेशक (कृषि प्रसार), ICAR ने पुरस्कार प्रदान किए और कहा कि 'किसान सबसे बड़ा शोधकर्ता है, जो हर दिन मिट्टी पर प्रयोग करता है।'

उद्घाटन सत्र में श्री अनिल धस्माना, पूर्व सचिव, R&AW और पूर्व अध्यक्ष, NTRO, ने कहा कि दूरदराज़ के किसानों को नई तकनीकों से जोड़ने की आवश्यकता है। श्री विनोद मिश्रा, कंट्री मैनेजर, UNOPS, ने कहा कि 'मिलेट खेती भारत में अगली बड़ी कृषि क्रांति बन सकती है।'

किसान ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह सात श्रेणियों-जैविक/प्राकृतिक, संरक्षित खेती, फूड प्रोसेसिंग, कृषि स्टार्ट-अप, डेयरी, मत्स्य पालन और नई कृषि तकनीक में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसानों को सम्मानित करता है। जूरी में कृषि और मीडिया क्षेत्र के वरिष्ठ विशेषज्ञ पद्मश्री किसान सेठपाल सिंह, डॉ. शैलेन्द्र राजन, प्रो. ए. पी. राव और पत्रप्रवर्तक प्रताप सोमवंशी शामिल थे।

यूएन विश्व मृदा दिवस 2025

स्वस्थ शहरों की नींव - स्वस्थ मिट्टी

विश्व मृदा दिवस हमें हर वर्ष यह संदेश देता है कि मिट्टी सिर्फ खेतों की नहीं, बल्कि जीवन की भी बुनियाद है। इस वर्ष की थीम 'स्वस्थ शहरों के लिए स्वस्थ मिट्टी' इसी बात पर जोर देती है कि ग्रामीण माटी की गुणवत्ता ही शहरों के भोजन, पेयजल और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में सबसे बड़ी भूमिका निभाती है।

शहर चाहे जितने आधुनिक हों, उनकी खाद्य सुरक्षा का आधार अंततः वही मिट्टी है जो छोटे किसानों और हमारे खाद्य तंत्र को पोषित करती है।

शुष्क क्षेत्रों की मिट्टी पर बढ़ता दबाव

एशिया और अफ्रीका के शुष्क अंचलों में मिट्टी का स्वास्थ्य किसानों के लिए पहली सुरक्षा ढाल है। मिट्टी स्वस्थ रहे तभी फसल टिकेगी, और किसान परिवार भी। लेकिन बदलते मौसम, बेतरतीब भूमि उपयोग, पोषक तत्वों की कमी और मिट्टी की सघनता जैसी समस्याएँ मिट्टी को तेजी से कमजोर कर रही हैं।

CGIAR प्रणाली का हिस्सा होने के नाते ICRISAT का उद्देश्य विज्ञान और तकनीक के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान देना है, ताकि मिट्टी की सेहत बहाल हो और किसान मजबूत बनें।

तेलंगाना की मिसाल: चलित मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला

ICRISAT का मानना है कि मिट्टी की जानकारी तभी उपयोगी है जब वह किसान तक आसानी से पहुँचे। तेलंगाना में इसी सोच के साथ राज्य की पहली मोबाइल स्वॉयल हेल्थ टेस्टिंग बस बनाई गई। लॉरस चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से शुरू हुई यह पहल गाँव-गाँव जाकर किसानों की मिट्टी जाँच रही है। अब तक इस बस ने 22 गाँवों में जाकर 2,400 से अधिक मिट्टी नमूनों की जांच की और किसानों को व्यक्तिगत मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान किए हैं। किसान अब अपने खेत की जरूरत के अनुसार उर्वरक का चुनाव कर पा रहे हैं, जिससे लागत कम हो रही है और उत्पादन क्षमता बढ़ रही है।

यह मॉडल अन्य राज्यों के लिए भी सरल और प्रभावी समाधान बन सकता है।

इसके साथ ही 1,500 से अधिक विद्यार्थियों ने इस मोबाइल लैब के माध्यम से मिट्टी विज्ञान को practically समझा है-जो भविष्य में कृषि और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अधिक संवेदनशील नागरिक बनेंगे।

अफ्रीका में मिट्टी संरक्षण के नए कदम

अफ्रीका में भी ICRISAT के साझेदारी-आधारित कार्य से मिट्टी की सेहत सुधारने की पहल को नया बल मिला है। नाइजर में सुधारित ज्वार-बाजरा किस्मों, माइक्रोडोज़ उर्वरक तकनीक और प्राकृतिक पुनर्जनन से किसानों की उपज दोगुनी तक पहुँची है। केन्या के जलवायु-स्मार्ट गाँवों में ज़ै पिट, कम्पोस्टिंग और फसल अवशेष प्रबंधन ने बंजर भूमि को फिर उपजाऊ बनाया है।

मलावी और तंजानिया में जैविक खाद के साथ सटीक उर्वरक उपयोग ने पोषक कमी दूर करने में मदद की और लागत भी नियंत्रण में रखी। ये उदाहरण बताते हैं कि अफ्रीका और भारत दोनों ही शुष्क क्षेत्रों में मिट्टी की क्षमता को फिर से उभारने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ा रहे हैं।

मिट्टी सघनता: एक छुपा हुआ खतरा

मिट्टी की सघनता (Compaction) एक ऐसी समस्या है जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। इसी मुद्दे पर ICRISAT और फ्रांस के IRD द्वारा आयोजित CompacSol कार्यशाला में आठ संस्थानों के वैज्ञानिक एकत्र हुए।

सघन मिट्टी में पानी नहीं उतरता, जड़ें नहीं बढ़ पातीं और फसल कमजोर होती है।

यह समस्या आजकल शहरों के आसपास भी बढ़ रही है—भारी निर्माण, वाहन दबाव और अव्यवस्थित विकास के कारण मिट्टी की ऊपरी परतें क्षतिग्रस्त हो रही हैं। इससे पेड़ों की वृद्धि, भूजल पुनर्भरण और तापमान संतुलन प्रभावित होता है।

CompacSol कार्यक्रम के माध्यम से ICRISAT सघनता मापने के मानक विकसित कर रहा है, डेटा साझा प्रणाली बना रहा है और ग्लोबल स्वॉयल लैब नेटवर्क के साथ मिलकर वैज्ञानिक क्षमता बढ़ा रहा है।

बेहतर आंकड़े ही बेहतर निर्णयों की कुंजी हैं।

नवाचार और प्रशिक्षण के माध्यम से भविष्य निर्माण

मिट्टी संरक्षण तभी संभव है जब लोग और संस्थान उसके उपयोग और प्रबंधन को समझें।

ICRISAT की ड्राईलैंड अकादमी द्वारा संचालित ITEC प्रशिक्षण विकासशील देशों के तकनीकी विशेषज्ञों को टिकाऊ कृषि से जुड़े कौशल देता है।

नया स्थापित ICRISAT Centre of E&cel-lence for South-South Cooperation (ISSCA) नीति-निर्माताओं को प्रमाण-आधारित समाधान उपलब्ध करा रहा है, जिससे वे अपने देशों में मृदा प्रबंधन की प्रभावी रणनीतियाँ लागू कर सकें।

युवाओं और किसानों की बेहतर समझ के लिए ICRISAT ने MRIDA नामक शिक्षण गेम ऐप विकसित किया है, जिसमें खिलाड़ी मिट्टी पर अलग-अलग कृषि फैसलों का प्रभाव सरल तरीके से समझ सकते हैं।

मिट्टी बचेगी तो भविष्य बचेगा

ICRISAT का पूरा कार्य एक ही संदेश देता है—

स्वस्थ मिट्टी से ही मजबूत गाँव बनते हैं, और मजबूत गाँव ही स्वस्थ शहरों की नींव रखते हैं। विश्व मृदा दिवस 2025 के अवसर पर ICRISAT सरकारों, विकास साझेदारों और किसानों से अपील करता है कि वे मिट्टी संरक्षण को प्राथमिकता दें और इसके लिए संयुक्त प्रयास करें। CGIAR का हिस्सा होने के नाते ICRISAT शुष्क क्षेत्रों की मिट्टी को पुनर्जीवित करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। मिट्टी की रक्षा का अर्थ है जीवन की रक्षा।

— डॉ. हिमांशु पाठक, महानिदेशक, ICRISAT

मध्य प्रदेश में सिंचाई का बड़ा विस्तार

दो साल में 7.31 लाख हेक्टेयर बढ़ा सिंचाई क्षेत्र : मुख्यमंत्री

सिंचाई क्षमता को 100 लाख हेक्टेयर तक ले जाने का लक्ष्य, नदियों को जोड़ने की तैयारियाँ तेज

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पिछले दो वर्षों में प्रदेश में 7.31 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र सिंचाई से जुड़ा है। वर्ष 2026 तक सिंचाई क्षमता में 8.44 लाख हेक्टेयर की और वृद्धि होने जा रही है। राज्य सरकार का लक्ष्य प्रदेश को 100 लाख हेक्टेयर सिंचित क्षेत्र तक पहुँचाना है।

सिंचाई परियोजनाओं की निगरानी और समीक्षा अब प्रधानमंत्री गतिशक्ति पोर्टल के माध्यम से की जाएगी, ताकि योजनाओं की गति और गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके।

नदी जोड़ो परियोजनाओं से सिंचाई में बड़ा उछाल

मुख्यमंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार के सहयोग से पार्वती-कालीसिंध-चम्बल और केन-बेतवा जैसी अंतर्राज्यीय परियोजनाएँ प्रदेश के लिए बड़ी उपलब्धि हैं। इसी तर्ज पर राज्य में नदियों को जोड़ने की दिशा में गंभीर प्रयास शुरू किए गए हैं।

राज्य में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार ये नदी जोड़ो योजनाएँ प्रस्तावित हैं-

- कान्ह-गंभीर (उज्जैन)
- कालीसिंध-चंबल (मंदसौर, नीमच, उज्जैन)
- केन-मंदाकिनी (सतना)
- शक्कर-पेंच और दूधी-तामिया (सिवनी, छिंदवाड़ा)
- जामनेर-नेवन और नेवन-बीना (रायसेन)

इन परियोजनाओं से 5.97 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की नई सुविधा मिलेगी। कुल अनुमानित लागत रू. 9,870 करोड़ है और 7 जिलों के हजारों किसान सीधे लाभान्वित होंगे।

भोपाल मॉडल से कम लागत में सुरक्षित जलाशय

सीएम डॉ. यादव ने भोपाल की प्राचीन झील तकनीक का अध्ययन कर कम लागत में सुरक्षित जलाशय और बांध विकसित करने के निर्देश दिए। विभाग को इस मॉडल का प्रदर्शन तैयार करने को कहा गया है।

चालू परियोजनाओं की प्रगति

जल संसाधन विभाग ने बैठक में प्रमुख परियोजनाओं की प्रगति प्रस्तुत की-

सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी परियोजना, उज्जैन

- लागत: रू. 614.53 करोड़
- प्रगति: 48 प्रतिशत

कान्ह डायवर्सन क्लोज-डक्ट परियोजना, उज्जैन

- लागत: रू. 919.94 करोड़
- प्रगति: 42 प्रतिशत

सिंहस्थ 2028 हेतु घाट निर्माण व अन्य कार्य

- लागत: रू. 778.91 करोड़

बैठक में जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। यह सभी प्रयास प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं का तेज़ी से विस्तार कर कृषि विकास को नई दिशा देने वाले हैं।

प्राकृतिक खेती में लागत कम, लाभ अधिक है : श्री सिंह

भोपाल (कृषक जगत)। मध्य प्रदेश सरकार के लोक निर्माण विभाग के मंत्री और प्रयोगधर्मी किसान श्री राकेश सिंह का कहना है कि यदि खेती प्राकृतिक तरीक़े से की जाए तो किसानों को रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और अन्य दवाइयों की आवश्यकता लगभग समाप्त हो जाएगी। इससे खेती की लागत घटेगी और उत्पादन भी संतोषजनक मिलेगा।

श्री सिंह के अनुसार, रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग से न केवल मिट्टी की सेहत बिगड़ती है, बल्कि किसानों और खेतों में काम करने वाले मज़दूरों में गंभीर बीमारियों-विशेषकर कैंसर का जोखिम भी बढ़ जाता है। उनका कहना है कि केमिकल फर्टिलाइज़र के बेहिसाब प्रयोग से मिट्टी कड़क और बेजान हो रही है। भूमि की जल-धारण क्षमता कम होती जा रही है, जिसके कारण सिंचाई का अधिकतर पानी व्यर्थ बह जाता है। मिट्टी को उर्वरता देने वाले केंचुए गहराई में चले गए हैं और फसलों के हानिकारक कीटों का आहार बनने वाले मित्र कीट भी खेतों से लगभग गायब हो चुके हैं। इसके उलट, प्राकृतिक खेती में मिट्टी में उपयोगी जीवाणुओं की संख्या बढ़ती है, जिससे फसलों को सभी प्रकार के पोषक तत्व संतुलित रूप में मिलते हैं और पैदावार भी बेहतर होती है।

श्री राकेश सिंह म.प्र. के उद्यानिकी बाहुल्य जिले छिंदवाड़ा के प्रभारी मंत्री भी हैं। जबलपुर से चार बार लोकसभा सदस्य रहे लोकप्रिय जनप्रतिनिधि श्री सिंह का कहना है कि किसानों में यह ग़लतफ़हमी है कि प्राकृतिक खेती से उत्पादन घट जाता है। उनके अनुसार, नैसर्गिक तरीक़े से उगी फसलों का स्वाद, रस, रूप और गंध अलग एवं श्रेष्ठ होते हैं।

श्री सिंह ने किसानों से अपील की कि वे प्राकृतिक खेती को अपनाकर अपनी खेती की बढ़ती लागत को कम करें और मिट्टी व स्वास्थ्य दोनों की रक्षा करें।

मप्र लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह को मुलाकात के दौरान रबी विशेषांक भेंट करते हुए कृषक जगत संपादक सुनील गंगराड़े।

प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना के लिए 8 आईएएस नोडल अधिकारी नियुक्त

भोपाल। प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना में प्रदेश के चुनिन्दा जिलों के लिए सरकार ने आईएएस अधिकारियों को नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। ये अधिकारी, जिलों की कार्य योजना तैयार कराकर पोर्टल (Dashboard) पर अपलोड करायेंगे एवं योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए निगरानी करेंगे। ये अधिकारी हैं कृषि संचालक श्री अजय गुप्ता - उमरिया, पंजीयक, सहकारी समिति श्री मनोज पुष्प - डिंडौरी, प्रबंध संचालक, मत्स्य महासंघ सुश्री निधि निवेदिता -अलीराजपुर, प्रबंध संचालक, मंडी श्री कुमार पुरूषोत्तम -शहडोल, उप सचिव, कृषि श्री संतोष कुमार वर्मा - सीधी, सदस्य सचिव नीति आयोग श्री ऋषि गर्ग - निवाड़ी, सीईओ रोजगार गारंटी परिषद श्री अवि प्रसाद - टीकमगढ़ और उप सचिव, नर्मदा घाटी विकास श्री राहुल धोटे -अनूपपुर।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

सौ से एक सौ बस दिन में पके, धान जातियां भाय।
अधिक पकें उत्तम अवधि में, फसल मनहर घर आय।

रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन : आभार के साथ पर्याप्त खाद - बिजली भी दें

भारत में पिछले 10 वर्षों में कुल खाद्यान्न उत्पादन में लगभग 106 मिलियन टन से भी अधिक की ऐतिहासिक वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2015-16 में कुल 251.54 मिलियन टन के मुकाबले पिछले साल 2023-24 के दौरान 357.73 मिलियन टन का रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन हुआ है। चावल का उत्पादन भी रिकॉर्ड स्तर पर बढ़कर 1501.84 लाख टन हो गया है। यह पिछले वर्ष के 1378.25 लाख टन चावल उत्पादन से 123.59 लाख टन अधिक है। गेहूं उत्पादन भी बढ़कर 1179.45 लाख टन हो गया है। इसी तरह मूंग का उत्पादन बढ़कर 42.44 लाख टन, सोयाबीन उत्पादन 152.68 लाख टन, मूंगफली उत्पादन 119.42 लाख टन की रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। मक्का और श्री अन्न का उत्पादन 434.09 लाख टन और 185.92 लाख टन अनुमानित है। वर्ष 2024-25 के दौरान कुल तिलहन का उत्पादन रिकॉर्ड 429.89 लाख टन अनुमानित है, जो वर्ष 2023-24 के 396.69 लाख टन उत्पादन से 33.20 लाख टन अधिक है। तिलहन उत्पादन में रिकॉर्ड वृद्धि देखी गई क्योंकि मूंगफली और सोयाबीन का अनुमानित उत्पादन क्रमशः 119.42 लाख टन और 152.68 लाख टन रहा, जो पिछले वर्ष के क्रमशः 101.80 लाख टन और 130.62 लाख टन की तुलना में क्रमशः 17.62 लाख टन और 22.06 लाख टन अधिक है। रेपसीड और सरसों का उत्पादन 126.67 लाख टन अनुमानित है। कृषि उत्पादन में यह वृद्धि उत्साहजनक है इसका पूरा श्रेय देश के मेहनतकश किसानों को दिया ही जाना चाहिए। इस उपलब्धि पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने किसानों का आभार व्यक्त किया है। किसानों का आभार व्यक्त करना तो सरकार का फर्ज बनता है क्योंकि करीब डेढ़ अरब की जनसंख्या के लिए खाद्यान्न का उत्पादन किसान ही करते हैं। लेकिन जब खाद और बिजली की की कमी के साथ अधिसूचित फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जैसे मुद्दों पर किसानों को परेशान होना पड़ता है तब सरकार का किसानों को आभार व्यक्त करना केवल औपचारिकता मात्र लगता है। देश में नकली बीजों का व्यवसाय फल फूल रहा है, जिसका खामियाजा किसानों को उठाना

पड़ता है। खाद की कमी लगातार बनी हुई है। केंद्र और राज्य सरकारें कितना ही दावे कर लें कि खाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है और किसानों को समय पर खाद उपलब्ध हो जाएगा, सरकारें इस दावे पर खरी नहीं उतर रही है। रबी का मौसम की फसलों की बोवनी का काम तीव्र गति से जारी है और किसानों को खाद के लिए रात-रात भर सहकारी समितियों के सामने लाईन लगाना पड़ रहा है। जब उन्हें सहकारी समितियों से खाद नहीं मिलता तब वे अधिक राशि भुगतान कर निजी दुकानों से खरीदने को मजबूर हो जाते हैं। खरीफ के मौसम में बिजली की समस्या नहीं रहती लेकिन रबी की फसलों की सिंचाई के लिए सीमित घंटों के लिए बिजली की आपूर्ति की जाती है। मध्यप्रदेश में तो सिंचाई के लिए दस घंटे बिजली देने की व्यवस्था की गई है लेकिन वह भी किश्तों में दी जाती है। कड़ाके की सर्दी में रात के समय सिंचाई के लिए बिजली उपलब्ध होने का कोई औचित्य नहीं है। किसानों को दिन के समय पर्याप्त समय के लिए बिजली की आपूर्ति की जानी चाहिये। यह प्रश्न बार-बार उठता है कि खरीफ और रबी की फसलों की बोवनी के पहले किसानों को खाद की जरूरत होती है और सरकारें यह दावा भी करती हैं कि खाद की कोई कमी नहीं है तो उन्हें खाद के लिए दर-दर की ठोकरें क्यों खानी पड़ती है? खाद की कमी से जूझना मानों किसानों की नियति बन गई है। वैसे कृषि विभाग अनुमान भी लगा लेता है कि राज्य में कितने टन खाद की जरूरत है। आकलन के अनुसार थोड़ा अधिक मात्रा में खाद की व्यवस्था कर ली जाए तो किसानों को इस तरह परेशान नहीं होना पड़ेगा। जब न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं और भावांतर योजना के लिए पंजीयन कराया जाता है, उसी तरह खरीफ और रबी के मौसम के पहले किसानों को कितना और कौन सी खाद की आवश्यकता है, पंजीयन कराने की व्यवस्था लागू करनी चाहिये ताकि मांग के अनुसार खाद का इंतजाम किया जा सकेगा। यदि पंजीयन के अनुसार खाद की उपलब्धता होती है तो उसी के अनुसार वितरण करने में आसानी होगी और वितरित करने वाले विभागों और संस्थाओं के कार्य में भी पारदर्शिता आएगी तथा किसानों को न तो खाद के लिए चक्कर लगाने पड़ेंगे और न ही खादों के वितरण में अनियमितता होने की सम्भावना होगी। इस पर भी जिम्मेदारों को विचार करना होगा कि किसान खाद के लिए रात-रात भर पंक्ति में खड़ा रहे या खेत में काम करे...। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को यह सुनिश्चित करना होगा कि अनुमानित मांग के अनुसार खाद की पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था समय से पहले कर लें। एक कृषि मौसम में जितने खाद की खपत होती है, बफर स्टाक हमेशा उपलब्ध रहेगा तो जहां खाद की कमी हो रही है, वहां पहुंचाया जा सकता है। इससे किसानों को बाजार से महंगा खाद खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, और उन्हें अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ेगा।

ग्रामीण आजीविका : बकरी के महत्व को कम मत आंकिए

● भारत डोगरा

ग्रामीण पशुपालन में प्रायः गाय और भैंस को अधिक महत्व दिया गया है, पर अनेक निर्धन परिवारों से पूछने पर पता चलेगा कि उनके लिए बकरी-पालन का महत्व इससे कम नहीं है, शायद अधिक ही हो। अधिकांश निर्धन परिवारों के पास गाय और भैंस की संभावना अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि कुछ बकरियां होने की संभावना कहीं अधिक है। यदि कम समृद्ध ग्रामीण परिवारों की दृष्टि से देखें तो बकरी पालन पशुपालन का अधिक महत्वपूर्ण पक्ष माना जा सकता है।

बकरी पालन के इस महत्व को समझते हुए 'सृजन' संस्था ने ग्रामीण आजीविका सुधारने के अपने प्रयासों में इसे समुचित महत्व दिया है व अनेक स्तरों पर बकरी-पालन आधारित आजीविका को सुधारने का प्रयास अपने अनेक कार्यक्षेत्रों में किया है। मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले में 'सृजन' के कार्यकर्ताओं ने बकरी-पालन संबंधी अपने पांच प्रयासों के बारे में बताया। पहला प्रयास तो यह है कि बकरियों के रहने के स्थान को अधिक स्वच्छ व सुरक्षित बनाया जाए। विशेषकर मेमनों के लिए अधिक सुरक्षित, अलग स्थान की व्यवस्था करने का प्रयास किया गया।

दूसरा प्रयास यह हुआ कि बकरियों के लिए बेहतर चारे की व्यवस्था की गई। उनके लिए अधिक पौष्टिक आहार तैयार किया गया। साथ में सामान्य पत्ते के चारे से भी धूल हटाकर, अधिक स्वच्छ रूप से खिलाने पर ध्यान दिया गया। आसपास के स्थानों में जहां बेहतर नस्ल की बकरी मिली वह उपलब्ध करवाई गई। बिक्री के बेहतर अवसर उपलब्ध करवाए गए। अंत में सबसे महत्वपूर्ण प्रयास बकरियों की बीमारी के इलाज के लिए गांव के भीतर ही सुविधा उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया।

महात्मा गांधी की प्रिय बकरी की हैसियत जानना हो तो किसी भी आदिवासी समाज में चले जाइए। वहां बकरी न सिर्फ दुधारू जानवर, बल्कि लगभग बैंक का दर्जा रखती है। वक्त-बेवक्त जरूरत पड़ने पर बकरी बेचकर लोग अपना काम चला लेते हैं। कैसे किया जाता है, इसी बकरी का पालन-पोषण?

अनेक बकरी पालक बताते हैं कि बकरी का इलाज समय पर न होने के कारण इनकी मृत्युदर कई बार अधिक हो जाती है। इसके लिए 'सृजन' का उपाय है कि गांव में ही महिलाओं को बकरी के इलाज का प्रशिक्षण देकर 'पशु-सखी' तैयार की जाएं जिससे उचित समय पर व कम खर्च पर बकरियों का इलाज हो जाए और इसके लिए दूर न जाना पड़े। इसके साथ ही गांवों में अनेक महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका का एक नया स्रोत मिल जाए।

शिवपुरी के गांवों में ऐसी 'पशु-सखी' बहुत सक्षम रूप में आगे आई हैं। सीमा जाटव ने इस कार्य में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली है कि अब उनकी सेवाओं का उपयोग अन्य 'पशु-सखियों' को प्रशिक्षण देने के लिए होता है। उन्हें प्राकृतिक खेती में भी दक्षता प्राप्त है व वे इसका प्रशिक्षण भी देती हैं। मनीषा लोधी ने सामाजिक कार्य में शिक्षा प्राप्त की है। वे 'पशु-सखी' की भूमिका निभाने के साथ-साथ एक 'प्राकृतिक शिक्षा केन्द्र' भी चला रही हैं। इसके अतिरिक्त वे रात को सिलाई कार्य भी करती हैं। इस तरह की कुछ महिलाएं कई जिम्मेदारियां निभाते हुए ग्रामीण नेतृत्व में भी आगे आ रही हैं व मेहनत तथा निष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं।

मध्यप्रदेश के ही टीकमगढ़ जिले में अनेक ऐसी 'पशु-सखियां' हैं जिन्होंने आजीविका के इस नए स्रोत के बल पर अपने परिवार की नाजुक आर्थिक

स्थिति को संभाल लिया है। भारती अहिरवार नादिया गांव की ऐसी ही दलित महिला हैं। उन्होंने लखनऊ जाकर 'पशु-सखी' का प्रशिक्षण प्राप्त किया और बकरियों की बीमारी, पोषण, वैक्सीन आदि के बारे में बहुत कुछ सीखा। जब वे अपनी नई यूनीफार्म पहनकर व दवाओं का बैग तैयार कर दूसरे घरों में बकरी के इलाज के लिए जाने को तैयार हुईं, तो आस-पड़ौस के कुछ लोगों ने मजाक उड़ाया व छींटाकशी की, पर भारती ने इसकी परवाह नहीं की। अनेक बकरियों का सफल इलाजकर उन्होंने शीघ्र ही गांव में नया सम्मान प्राप्त कर लिया। गांववासियों ने भी महसूस किया कि गांव में ही अगर बकरी को सही समय पर इलाज मिल जाए तो उपयोगी होगा और इस पर खर्च भी बहुत कम होगा। भारती ने उन्हें बीमारी से बचाव के उपाय बताने भी शुरू किए व अपने पास उपलब्ध बकरी के अधिक पौष्टिक आहार के विषय में भी बताया।

जहां भारती की सेवाओं से गांव के स्तर पर बकरी पालन में सुधार हुआ, वहां भारती ने अपनी नई जानकारी का लाभ उठाकर अपने परिवार में भी बकरी पालन को बढ़ावा दिया। इस तरह भारती को पहले वर्ष में लगभग 60,000 रुपए की आय हुई तो उन्होंने इसका उपयोग अपने बच्चों की शिक्षा सुधारने में किया। ऐसी ही एक सफल 'पशु-सखी' ने बकरी पालन संबंधी एक सर्वेक्षण भी अपने गांव बिजरावन में किया। इस सर्वेक्षण में यह स्पष्ट हुआ कि गांव में लगभग 90 प्रतिशत परिवारों ने बकरियां पाली हुई हैं। औसतन एक परिवार के पास 5 से 10 बकरियां पाई गईं। इससे पता चलता है कि ऐसे अनेक गांवों के लिए बकरी पालन कितना महत्वपूर्ण है। विशेषकर कठिन समय में बकरी पालन से राहत मिल जाती है। इस स्थिति में 'सृजन' ने पशुपालन के क्षेत्र में बकरी पालन को प्रोत्साहित करने को प्राथमिकता दी व अनेक गांवों में बकरी पालन की स्थितियों में सुधार किया। इसके साथ अनेक महिलाओं को आजीविका का नया सम्मानजनक स्रोत मिला व महिला नेतृत्व को भी प्रोत्साहन मिला। हालांकि 'सृजन' के अधिकांश प्रयास बकरी पालन में सुधार के हैं, पर कुछ स्थानों पर संस्था ने निर्धन परिवारों को बकरियां उपलब्ध भी करवाई हैं। सरकारी कार्यक्रमों के साथ तालमेल बनाकर भी बकरी पालन को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। (सप्रेस)

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानियां

- दीपक चौहान (वैज्ञानिक–कृषि अभियांत्रिकी)
- डॉ. मृगेन्द्र सिंह (वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख)
- डॉ. अल्पना शर्मा (वैज्ञानिक)
- डॉ. बृजकिशोर प्रजापति (वैज्ञानिक)
- भागवत प्रसाद पंद्रे (कार्यक्रम सहायक)

कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर (म. प्र.)

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानी ही सुरक्षा

किसान अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए कीटनाशकों का प्रयोग करता है एवं यह कीटनाशक जहरीले तथा मूल्यवान होते हैं। इन कीटनाशकों के प्रयोग की जानकारी के आभाव में कृषक एवं कृषक परिवार को जान जोखिम का सामना करना पड़ता है, इसलिए कृषकों को इसके उपयोग की एवं उपयोग के बाद क्या-क्या सावधानी रखना चाहिए इसकी जानकारी रखना अत्यंत आवश्यक है। कीटनाशकों के घातक प्रभाव से बचने के लिए आवश्यक होता है की उन पर लिखे हुए निर्देशों का पालन सही तरीके से करें एवं किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें क्योंकि थोड़ी भी लापरवाही बहुत बड़े नुकसान का कारण बन सकती है।

कीटनाशकों के प्रयोग से पहले सावधानियां

सर्वप्रथम किसानों को फसलों के शत्रु कीटों की पहचान कर लेना चाहिए, यदि पहचान संभव नहीं है तो स्थानीय स्तर पर उपस्थित कृषि विशेषज्ञ से कीट की पहचान करवा कर कीट के अनुरूप कीटनाशी का क्रय करना चाहिए।

- कीटनाशक का प्रयोग तभी करना चाहिए जब कीट द्वारा आर्थिक नुकसान की क्षति निम्न स्तर की सीमा से अधिक हो गयी हो।
- कीट को मारने का सही तरीका एवं समय का ध्यान रखना चाहिए।
- कीटनाशकों के विषाक्ता को प्रदर्शित करने के लिए कीटनाशक के डिब्बे पर तिकोने आकार का हरा, नीला, पीला एवं लाल रंग का निशान बना होता है। सबसे पहले लाल निशान वाले कीटनाशी का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि लाल निशान के कीटनाशी समस्त स्तनधारियों पर सबसे अधिक नुकसान करते है। लाल निशान वाले कीटनाशी की अपेक्षा पीले रंग के निशान वाले कीटनाशी कम तथा पीले रंग के कीटनाशी की अपेक्षा नीले रंग के निशान वाले कम नुकसान पहुंचाते है। सबसे कम नुकसान हरे रंग के निशान वाले कीटनाशी से होता है।
- कीटनाशक खरीदते समय हमेशा उसके उत्पादन की तिथि एवं उपयोग की अंतिम तिथि को अवश्य पढ़ लेना चाहिए ताकि पुरानी दवाई को खरीदने से बचा जा सके क्योंकि पुरानी दवा कम अथवा नहीं के बराबर असरदार हो सकती है, जिससे आर्थिक नुकसान से बचा जा सकता है।
- कीटनाशक के पैकिंग के साथ एक उपयोग करने के लिए निर्देशिका पुस्तिका अथवा लीफलेट को ध्यानपूर्वक पड़ना आवश्यक है, जिससे उपयोग का तरीका तथा मात्रा प्रयोग की जा सकती है।
- कीटनाशकों का भण्डारण हमेशा साफ सुथरी, हवादार एवं सूखे स्थान पर करें।
- यदि अलग-अलग समूहों के कीटनाशकों का प्रयोग करना हो तो एक के बाद दूसरे का प्रयोग करें।
- ऐसे कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करें जिसके प्रयोग से पत्तों में रासायनिक अम्ल बनता हो।

कीटनाशियों के प्रयोग के बाद सावधानियां

- बचे हुए घोल को कभी भी पम्प में नहीं छोड़ें।
- खली डिब्बे को किसी अन्य काम में नहीं लें बल्कि उसे नष्ट कर दें।
- कीटनाशी के छिड़काव के समय प्रयोग में लाये गए कपड़े, बर्तन को अच्छी तरह से धोकर रखें।

कीटनाशकों के प्रयोग से करते समय सावधानियां

- शरीर को पूरी तरह से बचाने के लिये ऐसे कपड़े पहने जो पूरी तरह से शरीर को ढक सके जिससे यदि कीटनाशक रसायन कपड़ों पर लग जाये तो उसे बदला जा सकता है एवं हाथों में रबर के दस्ताने अवश्य पहनें तथा मुँह पर मास्क लगा लें एवं आँखों की सुरक्षा के लिए चश्मा लगा लें।
- बहुत जहरीले कीटनाशी को प्रयोग करते समय अकेले कार्य नहीं करें एक या दो व्यक्तियों को खेत के बाहर मौजूद रहें आपातकाल में जल्द मदद मिल सके।
- कीटनाशी को मिलाने के लिए लकड़ी के डंडे का प्रयोग करें तथा घोल को ढककर रखें ताकि उसे छोटे बच्चे एवं कोई पशु धोखे में पी न ले।
- कीटनाशी छिड़कने वाले को छिड़काव की पूरी जानकारी हो तथा उसके शरीर पर कोई घाव नहीं हो तथा छिड़काव के समय चलने वाली हवा से बचें।
- कीटनाशी का घोल बनाते समय किसी बच्चे या अन्य आदमी या जानवर को पास में नहीं रहने दें।
- दवा के साथ मिली हुई प्रयोग पुस्तिका को अच्छे से पड़ कर उसके अनुसार कार्य करें।
- कीटनाशक का छिड़काव करने के पश्चात त्वचा को अच्छी तरह से साफकर लें।
- छिड़काव के समय साफपानी की पर्याप्त मात्रा पास में रखें।
- कीटनाशी मिलते समय जिस दिशा से हवा का बहाव हो रहा हे उसी दिशा में खड़े होकर कीटनाशी को मिलायें।
- कीटनाशी का धुंआ सांस के द्वारा शरीर के अंदर नहीं जाने दें।
- एक बार जितनी आवश्यकता हो उतना ही कीटनाशी ले जायें।
- कीटनाशक छिड़कने वाले यंत्र की जाँच कर लें, यदि यंत्र सही काम नहीं कर रहा हो तो उसकी मरम्मत कर लें तथा नोजल को कभी भी मुँह से खोलने का प्रयास नहीं करें।
- तरल कीटनाशियों को सावधानीपूर्वक मशीन में डालें एवं यह ध्यान रखें की किसी प्रकार मुंह, कान, नाक, आँख आदि में रसायन न जाए। यदि गलती से ऐसा हो तो तुरंत साफ पानी से बार - बार प्रभावित अंग को धोयें।
- कीटनाशी का प्रयोग करते समय किसी प्रकार का धूम्रपान या कोई खान -पान नहीं करें।
- कीटनाशी का प्रयोग करते समय यह सुनिश्चित कर लें की कीटनाशी की मात्रा पूरी तरह से पानी में घुल गयी हो।
- हवा के विपरीत दिशा में खड़े होकर छिड़काव या भुरकाव करें।
- छिड़काव के लिए उपयुक्त समय सुबह या सायंकाल का हो यथा यह ध्यान रखें की हवा की गति 7 किमी प्रति घंटा से कम ही हो तथा तापमान 21 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास रहना सर्वोत्तम होता है।
- फूल आने पर फसलों पर कम से कम छिड़काव करें और यदि छिड़काव करना हो तो हमेशा सायंकाल में ही छिड़काव करें, जिससे मधुमक्खियां रसायन से प्रभावित न हो।
- कीटनाशकों का व्यक्ति पर प्रभाव दिखने लगे तो तुरंत डॉक्टर के पास ले जाए साथ ही कीटनाशी का डिब्बा भी लेकर जायें।

- जिस भी कीटनाशक का प्रयोग करें उसका सम्पूर्ण विवरण लिखकर रख लें।
- बचे हुए कीटनाशक की शेष मात्रा को सुरक्षित स्थान पर भंडारित कर दें।
- पम्प को अच्छी तरह से साफकरके सुरक्षित स्थान पर रखें।
- कीटनाशी के कागज या प्लास्टिक को यदि जलाना हो तो उसके धुंए के पास नहीं खड़ा हों।
- कीटनाशी के छिड़काव के बाद अच्छी तरह से स्नान करके दूसरे वस्त्र पहने।
- कीटनाशी छिड़काव के बाद छिड़के गए खेत में किसी व्यक्ति एवं जानवर को नहीं जाने दें।
- कीटनाशी छिड़काव के बाद छः घंटे तक वर्षा नहीं हो। यदि वर्षा हो जाये तो पुनः छिड़काव करें।
- अंतिम छिड़काव एवं फसल की कटाई ता तुड़ाई के समय दवा में बताये अंतराल का अवश्य ध्यान रखें।

विष का प्राथमिक उपचार

सभी प्रकार की सावधानी रखने के उपरांत भी यदि कोई व्यक्ति इन कीटनाशकों का शिकार हो जाये तो निम्नलिखित सावधानियां अपनायें।

- रोगी के शरीर से विष को अति शीघ्र निकलने का प्रयास करें।
- विषमार दवा का तुरंत प्रयोग करें।
- रोगी को तुरंत पास के किसी अस्पताल या डॉक्टर के पास ले जायें।
- यदि जहर खा लिया हो तो एक ग्लास गुनगुने पानी में दो चम्मच नमक का घोल मिला कर उलटी करें।
- यदि व्यक्ति ने विष सूंघ लिया हो तो रोगी को शीघ्र खुले स्थान पर ले जायें, शरीर के कपड़े ढीले कर दें, यदि दौरे पड़ रहे हो तो अँधेरे स्थान पर के जायें।
- यदि साँस लेने परेशानी हो रही हो तो रोगी को पेट के सहारे लिटाकर उसकी बाँहों को सामने की और फैला लें एवं रोगी की पीठ को हल्के - हल्के सहलाते हुए दबाएं तथा कत्रिम श्वांस का प्रबंध करें।

इस प्रकार उपरोक्त सावधानियां को ध्यान में रखते हुए यदि कीटनाशियों का प्रयोग किया जाए तो इनसे होने वाले किसी भी प्रकार के नुकसान से बचा जा सकता है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

मटर में एकीकृत कीट-रोग प्रबंधन

मटर रबी मौसम में उगायी जाने वाली एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है, जिसका उपयोग ताजा सब्जी के अतिरिक्त सूखी मटर व डिब्बाबन्दी के रूप में किया जाता है। मटर में प्रोटीन एवं विटामिन के साथ-साथ कई खनिज लवण पाये जाते हैं। मटर एक बहुत लाभदायक खेती है, परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि इस फसल में आक्रमण करने वाले कीटों एवं बीमारियों को सही व उपयुक्त समय पर प्रबंधन करना, वरना अगली तुड़ाई में भारी कमी आ जाती है व उत्पादन बहुत कम हो जाता है। अतः मटर में लगने वाले कीड़ों एवं बीमारियों के बारे जानकारी प्राप्त करना तथा उनका सही समय पर प्रबंधन करने के लिए ज्ञान जरूरी है।

● डॉ. सुनील कुमार मंडल ● डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद
सहायक प्राध्यापक, क्षे. अनु. केन्द्र, झंझारपुर
कीट विज्ञान वि., स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पूसा
● डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार
skmandal6464@gmail.com

(अ) प्रमुख कीट

तना मक्खी (स्टेम फ्लाई): मटर में इस कीट

का प्रकोप अगेती फसल में अधिक होता है। यह कीट अक्टूबर-नवम्बर के महिनों में अधिक सक्रिय रहता है। जैसे ही पौधा जमीन से निकलता है, इसकी सुण्डी (कैटरपिलर) खा जाती है, जिससे खेत में पौधों की संख्या बहुत कम हो जाती है। अधिक आक्रमण होने पर तो कभी-कभी पुनः बुवाई करनी पड़ती है। अण्डे से निकली सुंडियां जमीन की सतह के नजदीक बाह्य तने में प्रवेश करती है एवं प्यूपा में परिवर्तित होने से पूर्व निकास द्वार भी बना लेती है। सुंडियां अन्दर ही अन्दर तने को खाकर सुरंग बना लेती हैं। क्षतिग्रस्त पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। तने में दरार पड़ जाती है एवं पौधा मुरझाने लगता है और अन्त में पौधा मर भी जाता है। पत्तियों पर चमकीले रंग की धारियों का पाया जाना इस कीट के आक्रमण के शुरू होने का संकेत देता है।

नियंत्रणः

● जिन स्थानों पर इस कीट का प्रकोप हमेशा बना रहता है, वहाँ बुवाई के समय कार्बोफ्यूरान 3जी या फ्रीप्रोनील 0.3 जी.आर. को 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिलायें।

● नोभाल्यूरान 30 ईसी या डायक्लोरभास 76 ईसी 1.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

फली छेदक (पोड बोरर): इस कीट का प्रकोप

मटर में फूल आने से लेकर फली बनने तक मार्च-अप्रैल तक रहता है। इसकी सूंडियां (कैटरपिलर) फलियों एवं दानों को खाकर क्षति पहुँचाती है। अण्डों से निकली हुई सुडियां अपने चारों ओर जाल बुनती है और फिर छेद कर फली में घुसकर दानों को खाती रहती है। ग्रसित फलियों में कुछ दाने कटे हुए तथा कुछ पूर्ण नष्ट हुए पाये जाते हैं। जिससे फलियों की बाजार मूल्य भी कम हो जाती है तथा उपज पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है।

नियंत्रणः

● गर्मी के महिनों में खेत की अच्छी तरह मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करें, ताकि कीट का प्यूपा बाहर आकर मर जाय।

● 5-7 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर लगायें, जिसके कैप्सूल या ल्यूर (हेलील्यूर) को 15 दिनों के अन्तर पर बदलते रहें। ट्रैप को फसल से 1.0-1.5 फीट उपर लगायें।

● रात्रि में वयस्क कीट को आकर्षित करने के लिए लाईट ट्रैप (प्रकाश प्रपंच) (1.0-2.0 ट्रैप/हेक्टेयर) लगायें।

● फूल वाली अवस्था पर नीम तेल 5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से फसलों पर छिड़काव करें।

● एनपीवी 250 एलई प्रति हेक्टेयर (1 मिली/लीटर पानी) की दर से शाम के समय छिड़काव करें। घोल में कच्ची शक्कर (500 ग्राम) एवं टीपोल (10 मिली) मिलायें। घोल का पानी खारा नहीं हो, क्योंकि खारे पानी में कार्बोनेट जो है, वो बाईकार्बोनेट में बदलकर अप्रभावी हो जाते हैं।

● कीटों के अधिक प्रकोप की स्थिति में इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी का 1.5 मिली/लीटर पानी या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी का 1.0 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

पर्ण सुरंगक (लीफमाईनर): इस कीट का प्रकोप मटर के निचली व मध्य पत्तियों में दिसम्बर

माह के अंत में प्रारम्भ होकर फरवरी माह के अंतिम व मार्च के प्रथम सप्ताह तक चरम सीमा पर पहुँच जाता है। इसकी सुंडियां पत्तियों के हरे भाग (क्लोरोफिल) को खाती है, जो टेढ़ी-मेढ़ी अनियमित आकृतियां बन जाती है। फलस्वरूप पत्तियां भोजन नहीं बना पाती है और पौधों की वृद्धि रूक जाती है। अत्यधिक ग्रसित पत्तियां सूख जाती हैं तथा पौधों में फूल व फली कम बनते हैं।

नियंत्रणः

● समय पर बुआई करें, क्योंकि पिछेली फसल में इस कीट का प्रकोप ज्यादा होता है।

● बुवाई से एक दिन पहले खेत तैयार करते समय अंतिम जुताई के वक्त फ्यूराडान 3जी या फ्रिप्रोनिल 0.3 जी.आर. को 25 किलोग्राम की दर मिट्टी में मिला दें।

● डाइक्लोरभास 76 ईसी (1 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव नई पत्तियाँ आने के समय करें।

● कीटों के अत्यधिक प्रकोप की स्थिति में मैलाथियान 50 ईसी या डायमेथोएट 30 ईसी (1.5 मिली/लीटर पानी) का छिड़काव करें।

माहू (एफिड): इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही मटर के कोमल तनों, पत्तियों की निचली सतहों, फूलों, कलियों तथा फलियों का रस चूसकर पौधे के विभिन्न कोमलांगों को क्षति पहुँचाती है। साथ ही यह एक मीठा द्रव (मधुरस) भी स्त्रावित करते हैं, जिससे फफूंद (कवक) का आक्रमण भी शुरू हो जाता है। कीटों से आक्रान्त पौधे छोटे रह जाते हैं तथा पत्तियाँ पीली पड़ जाती है। ग्रसित फलियाँ छोटी रह जाती है जिसमें या तो दाने नहीं बनते है, यदि बनते भी है तो छोटे रह जाते हैं।

नियंत्रण

● डायमेथोएट 30 ईसी (2 मिली/लीटर पानी) या ईमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल (0.25 मिली/लीटर पानी) या डायक्लोरभास 76 ईसी (1 मिली/लीटर पानी) को मिलाकर छिड़काव करें। यदि आवश्यक हो तो छिड़काव को 15-20 दिन बाद पुनः दोहरायें।

मूल ग्रन्थी व सूत्रकृमि (नेमाटोड): इस सूत्रकृमि (नीमाटोड) के प्रकोप से पौधों की जड़ों में गाठें बन जाती हैं। पौधा पीला पड़ने के साथ बढ़वार रूक जाती है, परिणामतः पैदावार में कमी आती है।

नियंत्रणः

● फसल-चक्र अपनायें।

● यदि फसल में सूत्रकृमि के प्रकोप होता है तो खेत में बीज की बुवाई के समय 25 किलोग्राम फ्यूराडान 3 जी. प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में मिलायें।

प्रमुख विमारियाँः

उखठा (ग्लानि) रोगः इस रोग से पौधों के जड़ों पर आक्रमण होता है, जो इसके प्रभाव से जड़ें काली पड़ जाती हैं। प्रभावित पौधा झुलस कर मर जाता है। अंग्रेजी किस्में इस रोग से ज्यादा प्रभावित होती हैं। फसल को अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में या नवम्बर माह में बुवाई करने से इसके आक्रमण से बचाया जा सकता है।

नियंत्रणः

● बुवाई से पूर्व बीजों को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज या थायरम या कैप्टान या मैंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।

● मैंकोजेब 2 ग्राम या घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 10-15 दिनों के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार 2-3 बार छिड़काव कर सकते हैं।

● 20-25 किलोग्राम सल्फर पाउडर को 10 किलोग्राम राख में मिलाकर प्रति हेक्टेयर भुरकाव करें।

● जिंक मैंगनीज कार्बोनेट 2 किलोग्राम प्रति 1 हजार लीटर में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

● प्रोपीकोनाजोल या टाइडामेफान या हेक्साकोनाजोल को 800 ग्राम/हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर सकते हैं।

चूर्णिल आसिता (पाउड्री मिल्ड्यू): यह एक फफूंदजनित रोग है, जिससे पौधों की पत्तियां

(निचली सतह), तने, शाखाओं एवं फलियों पर सफेद पाउडर जैसा (धब्बे) दिखाई देता है। इससे पौधे की बढ़वार रूक जाती है एवं उत्पादन में भी भारी कमी आती है।

नियंत्रण

● समय पर बुवाई करें। विलम्ब से बुवाई करने पर इस रोग का प्रकोप अधिक होता है।

● प्रतिरोधी किस्में जैसे- शिखा, रचना, सपना-2 एवं 5, पूसा प्रगति एवं पंत मटर-5 की बुवाई करें।

● रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें।

● 2 ग्राम घुलनशील गन्धक या 1 मिली कैराथियान या केलेक्सीन प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें। यह छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार दोहरायें।

पशुओं का चारा प्रबंधन

● डॉ. ओ.पी. दीनानी, सहायक प्राध्यापक
पशुचिकित्सा एवं पशुपालन
महाविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग (छ.ग.)

पशुओं के रखरखाव एवं प्रबंधन में लगभग 60 प्रतिशत लागत चारा व दाना में आती है। पशुओं के लिये आहार की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु चारा बैंक बनाया जावे। जिसमें शुष्क आहार पैरा कुट्टी एवं गेहूँ का संग्रहण किया जावे। पशुओं के लिए गोठान में सस्ता हरे चारे के रूप में अजोला का उत्पादन कर पशुओं को खिलाया जाये। सूखी घास का परिक्षण हे के रूप में तथा हरी घास का अचार साइलेज के रूप में कर इसे पशुओं को खिलाया जाये। वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता पशुओं हेतु सुनिश्चित की जावे। हरे चारे हेतु बहुवर्षीय फसल नेपियर की विभिन्न किस्में अधिक उपयोगी है। गोचर भूमि का चिन्हांकन कर चारा उत्पादन किया जा सकता है। मक्का, ज्वार, बाजरा की उपलब्धता अधिक होने पर कटाई करके उसकी कुट्टी काटकर साइलेज बना लेना चाहिये। खाद्य औद्योगिक उप-उत्पाद का उपयोग पशु आहार में किया जा सकता है।

मौसमी चारा फसलें :-

खरीफचारा फसलें- ज्वार, बाजरा, मक्का, मकचरी, लोबिया एवं ग्वार

रबी चारा फसलें- बरसीम, जई, रिजका

जायद-लोबिया, ज्वार एवं मक्का

बहुवर्षीय चारा फसलें :-

संकर बाजरा नेपियर घास (हाथी घास), गिनी घास, नंदी, अंजन, दीनानाथ, स्टाइलो (दलहन), त्रिसंकर नेपियर बाजरा, पैरा घास

फसल चक्र-1: संकर बाजरा नेपियर/मक्का+लोबिया- ज्वार+लोबिया- बरसीम.जापानी सरसों

वर्ष भर हरा चारा उत्पादन हेतु निम्नलिखित फसल चक्रण उपयुक्त है-

फसल चक्र-2: संकर बाजरा नेपियर/बहु कटाई वाली ज्वार- बरसीम/जई

नेपियर चारा का उत्पादन तकनीक-

मृदा एवं खेत की तैयारी: उचित जल निकास वाली टोमर भूमि सर्वोत्तम होती है। एक गहरी जुताई तत्पश्चात 2-3 हैरो या कल्टीवेटर में करके पारा लगा दिया जाता है।

खाद एवं उर्वरक: नेपियर की जड़ों की रोपाई से पूर्व 250 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर खेत में अच्छी तरह मिला लें। तत्पश्चात 60:40:30 कि.ग्रा. एन.पी.के.प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें। इसके बाद प्रत्येक कटाई पर 40 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़कें।

बुवाई का समय एवं विधि: सिंचित क्षेत्रों की जगह पर फरवरी के दूसरे सप्ताह से सितम्बर तक एवं असिंचित क्षेत्रों के स्थान पर वर्षा ऋतु में इसकी रोपाई की जा सकती है। नेपियर की जड़ तने की पंक्ति से पंक्ति एवं पौध से पौध की दूरी 50 सेमी रखें। यदि रबी में बरसीम की फसल को अंतर सस्य में बोया जाता है तब नेपियर की पंक्ति से पंक्ति की दूरी बढ़ाकर 2.5-3.0 मीटर कर सकते हैं।

चारागाह का विकास भी पशु पोषण के लिए किया जा सकता है। जिसमें निम्नानुसार चारा उत्पादन किया जा सकता है।

देशी बबूल	:	अंजन घास . स्टाइलो
अंजप पेड़	:	अंजन घास . स्टाइलो
सूबबूल	:	गिनी घास . स्टाइलो
गूलर	:	दीनानाथ घास . स्टाइलो
सफेद सिरिस	:	अंजन घास . स्टाइलो
कचनार	:	दीनानाथ घास . स्टाइलो

जड़ सहित तनों की मात्रा- एक हेक्टेयर क्षेत्र में रोपाई के लिए 20,000-40,000 कल्लों की आवश्यकता पड़ती है।

सिंचाई- यदि रोपाई फरवरी माह में की गई है। तो पहली सिंचाई रोपाई के तुरंत बाद एवं दूसरी एक सप्ताह बाद करनी चाहिये। गर्मी के दिनों में प्रत्येक 15-16 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

निंदाई गुड़ाई- खरपतवार की रोकथाम के लिये रोपाई के 30 दिन बाद एक निंदाई गुड़ाई अवश्यक करें।

कटाई- प्रथम कटाई रोपाई के 60 दिन बाद तत्पश्चात प्रत्येक कटाई 35 दिन एवं गर्मी के दिनों में 45 दिन के अंतर पर करते हैं।

उपज- औसतन प्रति हेक्टेकर प्रतिवर्ष 1200 क्विंटल हरा चारा प्राप्त होता है।

दूध उत्पादन के लिए पशुओं का चुनाव

● डॉ. प्रमोद शर्मा, कृविके, जबलपुर

पशु पालक भाई पशु हाट या बाजार में पशु खरीदने जाते हैं तो उनके साथ बड़ी समस्या यह रहती है कि अधिक दुग्ध उत्पादन हेतु/भैंस का चुनाव कैसे करें। इस समस्या के निवारण के लिये आवश्यक जानकारी इस लेख के माध्यम से प्रदाय की जा रही है। दूध उत्पादन हेतु पशुओं का चुनाव करते समय पशुपालकों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा।

(1) **बाह्य आकृति के आधार पर**
(2) **वंशावली के आधार पर**
(3) **संतान के उत्पादन के आधार पर**

बाह्य आकृति के आधार पर:

हाट या मेले में जहाँ कि पशुओं की जानकारी उपलब्ध नहीं होती है, वहाँ पर दुधारू पशुओं का चुनाव, उनकी बाह्य आकृति के अनुसार किया जाता है। इसमें कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर ध्यान दें।

शारीरिक बनावट : दुधारू गाय की पहचान उसकी त्रिभुजाकार शारीरिक बनावट से की जा सकती है। ऐसी दुधारू गाय का पिछला भाग आकार में बड़ा और भारी, परन्तु अग्रिम भाग अपेक्षाकृत पतला और छोटा होता है। दुधारू होता है। दुधारू गाय की त्वचा पतली, ढीली, चिकनी और मुलायम होती है।

पाँव: पशु के अगले पैर का नीचला भाग खड़ा (सीधा) होता है तथा पिछले पैर बगल से देखने पर हासिये के आकार के होते हैं।

छाती: दुधारू पशुओं की छाती चौड़ी, पसली अंदर की ओर होना चाहिए। आँखें चौकनी और चमकीली होनी चाहिए।

अयन एवं थन का आकार: दुधारू गाय का अयन का अगला हिस्सा पुष्ट और वृहद होना उचित माना जाता है। पिछले भाग से अयन चौड़ी दिखनी चाहिए तथा शरीर से इस तरह जुड़ा हो ताकि उथला जैसा लगे। अयन को स्पर्श करने पर वह मुलायम प्रतीत होता है। जिसकी दुग्ध शिराएँ विशेष रूप से विकसित होती है। गाय अथवा भैंस के अयन चार थनों में विभाजित रहते हैं। गाय का थन 5-6 सेमी लम्बा और 20-25 मि.मी. व्यास का हो, वह गाय अच्छी समझी जाती है समतल भूमि में खड़ी एक दुधारू गाय के थनों और जमीन के बीच 40-45 सेमी या अधिक से अधिक 48 सेमी की दूरी आदर्श मानी जाती है। झूलते या लपकते हुए अयन अच्छे नहीं माने जाते हैं, क्योंकि जब गाय व भैंसे चरने हेतु छोड़ी जाती है तो काँटे या नुकेले पदार्थ से थन को जख्म होने की संभावना रहती है और थनैला रोग की समस्या बढ़ जाती है। अयन में थनों की स्थिति समान दूरी पर होना चाहिए। यदि थनों में सूजन या दर्द आदि हो तो ऐसे गायों का चयन नहीं करें।

दूध की मात्रा का परीक्षण: हाट बाजार में गाय/भैंस खरीदते समय यदि तीन समय का दूध उत्पादन नापा जाए और औसत निकालकर गाय की दुग्ध उत्पादन क्षमता का सहीं आकलन किया जा सकता है।

उम्र के आधार पर: पशुओं की उम्र उनकी स्थायी कृन्तक जोड़ा दाँत तथा सींग पर उभरे घेरों द्वारा ज्ञात की जा सकती है। गाय या बैल की प्रथम स्थायी कृन्तक जोड़ा दाँत लगभग दो वर्ष में दिखने लगता है। जब कि पूरे कृन्तक जोड़ा दाँत 3-1/2 से 4 साल की उम्र में निकल आते हैं। अतः युवा, बूढ़े व अधिक उम्र के पशुओं की सही पहचान उनकी स्थायी कृन्तक दाँतों के आधार पर संभव और आसान होता है, क्योंकि अधिक उम्र के पशुओं के दुग्धोत्पादन में गिरावट आती है। दाँत के अतिरिक्त पशु की सींग पर उभरे घेरों से भी उसकी उम्र का अनुमान लगाना संभव है। सींग के घेरों की संख्या में दो और जोड़ देने पर उम्र का पता लगाया जा सकता है।

वंशावली के आधार पर:

आर्थिक पहलू से गाय एवं भैसों के गुणों को तीन क्रमों में बाँटा गया है 1. शारीरिक विकास, 2. दूध उत्पादन और 3. प्रजनन

दुधारू पशुओं की पहचान नस्ल के आधार पर अधिकांशतः की जाती है। प्रत्येक नस्ल के शारीरिक विकास उनकी वंशावली के आधार पर होता है। पशुओं के जनने के बाद दूध का उत्पादन बहुत कुछ अनुवांशिकता पर निर्भर करता है। माता-पिता से गुण बच्चों में जाते है, अतः दुधारू पशु के बच्चे भी अधिक दूध देने की क्षमता रखते है। बशर्त उन्हें अच्छा आहार एवं उत्तम व्यवस्थापन प्राप्त हो। सांड को दुग्ध प्रक्षेत्र का आधा हिस्सा माना जाता है। क्योंकि एक सांड से बहुत से बच्चे पैदा हो सकते हैं। अतः सांड को प्रजनन हेतु लाने के समय ठीक से चयन करना बहुत आवश्यक है। जनन और जननी दोनों का ही प्रभाव संतान के लक्षणों पर होता है।

संतान के उत्पादन के आधार पर:

दुधारू पशुओं का चुनाव उनकी संतान के उत्पादन के आधार पर किया जाना अधिक लाभकारी होता है। इन संतान में माता पिता दोनों के गुण सम्मिलित रहते है, अतः जिन पशुओं की संतान की उत्पादन क्षमता अधिक रहीत है, उन्हीं के आधार पर चयन किया जा सकता है। दो ब्यातों का अंतराल करीब 15 माह होना चाहिए ब्याने के तीन माह पश्चात ही गाय का पुनः गर्भधारण कर लेना अच्छा माना जाता है। पशुओं के आहार एवं वातावरण पर पशुधन की उत्पादकता एवं पशुओं की गुणवत्ता निर्भर करती है। परन्तु अच्छी गुणवत्ता के पशुओं का उत्पादन, उनमें पाये जाने वाले अनुवंशीय गुणों पर आधारित होता है।

पशुपालकों को सुझाव दिया जाता है कि दुधारू पशु का चुनाव करते समय उनकी शारीरिक बनावट, नस्ल उत्पादन क्षमता, उम्र इत्यादि बिन्दुओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त यह भी देखना चाहिये की पशु पूर्णरूप से रोगमुक्त हो। जहाँ तक संभव हो, गर्भवती गायें, भैसों का क्रय करना उचित रहता है। इसमें धोखाखड़ी की संभावना क्षीण हो जाती है।

बीज विधेयक, 2025 : मूल्य परीक्षण 'वीसीयू' के घेरे में

विधायी प्रक्रिया से पूर्व परामर्श दौर

● राजेश दुबे, मो.: 9981418650

कृषि में बीज फसल का आधार है, बीज की किस्म और गुणवत्ता से ही निर्धारित होता है कि फसल कैसी होगी। इसीलिए यह कहावत भी प्रचलित है कि 'जैसा बीज बोओगे वैसा फल पाओगे'। भारत सरकार ने भी संभवत: इस कहावत की भावना को समझते हुए किसान की आधारभूत समस्या गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता के लिए प्रयास प्रारंभ किया है। भारत सरकार का प्रस्तावित बीज विधेयक, 2025, बीज क्षेत्र को नियंत्रित करने वाले नियमों में आमूलचूल परिवर्तन करने का नवीनतम प्रयास है, जो बीज अधिनियम, 1966 और बीज नियंत्रण आदेश, 1983 को प्रतिस्थापित करेगा। केंद्रीय कृषि मंत्रालय का कहना है कि नया कानून गुणवत्ता वाले बीजों की आपूर्ति में सुधार करेगा, नकली बीजों पर अंकुश लगाएगा और किसानों को अधिक सुरक्षा प्रदान करेगा।

प्रस्तावित बीज विधेयक 2025 का उद्देश्य गुणवत्ता को विनियमित करके, नकली बीजों पर अंकुश लगाकर, तथा आसान आयात और डिजिटल ट्रेसेबिलिटी के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देकर भारत के बीज क्षेत्र का आधुनिकीकरण करना है। इस विधेयक के मसौदे में बाजार में उपलब्ध बीजों और रोपण सामग्री की गुणवत्ता सुनिश्चित करना, किसानों को किफायती दरों पर अच्छे बीज उपलब्ध कराना, नकली और घटिया बीजों की बिक्री पर अंकुश लगाना, किसानों को हानि से बचाना, नवाचार को बढ़ावा देना, बीज की वैश्विक किस्मों को किसानों तक पहुंचाने के लिए बीज आयात को उदार बनाना और बीज आपूर्ति श्रृंखलाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही द्वारा किसानों के अधिकारों की रक्षा का प्रस्ताव है।

विधेयक की मुख्य विशेषताएं

अनिवार्य पंजीकरण: किसानों की किस्म और विशेष रूप से निर्यात के उद्देश्य से उत्पादित बीज को छोड़कर, कोई भी बीज तब तक नहीं बेचा जाएगा जब तक कि वह पंजीकृत न हो। अनुमोदन से पहले, किस्मों को कई स्थानों पर खेती और उपयोग के लिए मूल्य (वीसीयू) VCU- Value for cultivation & use परीक्षण से गुजरना होगा। केवल वे किस्में ही बेची जा सकेंगी जो न्यूनतम अंकुरण और शुद्धता मानकों को पूरा करती हों। लेकिन, मौजूदा सीड्स एक्ट, 1966 के सेक्शन 5 के तहत नोटिफ़ाई की गई मौजूदा किस्मों को नए कानून के तहत रजिस्टर्ड माना जाएगा। मौजूदा कानून में ज़रूरी रजिस्ट्रेशन का कोई प्रोविज़न नहीं था।

बीजों की बिक्री का विनियमन: बीज की किस्में भारतीय न्यूनतम बीज प्रमाणन मानकों के अनुरूप होंगी। मज़बूत बाज़ार नियंत्रण और ट्रेसेबिलिटी के लिए नए विधेयक में प्रावधान है कि बीज विक्रेताओं और वितरकों को बीज बेचने, आयात करने या निर्यात करने के लिए राज्य द्वारा जारी पंजीकरण प्रमाणपत्र प्राप्त करना होगा। प्रत्येक बीज कंटेनर पर केंद्र सरकार के बीज पोर्टल के माध्यम से जनरेट किया गया एक क्यूआर कोड होना चाहिए ताकि पूरी ट्रैकिंग हो सके।

केंद्रीय बीज समिति: केंद्र सरकार द्वारा गठित, इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। यह बीज प्रोग्रामिंग, योजना, बीज विकास, उत्पादन, भंडारण, प्रसंस्करण, निर्यात और आयात आदि से संबंधित मामलों पर सलाह देगा।

राज्य बीज समितियां: राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएंगी, जिसमें अध्यक्ष और राज्य सरकार द्वारा नियुक्त या नामित 15 से अधिक सदस्य होंगे।

पंजीकरण उप-समितियां: उनके दावों की जांच करने के बाद पंजीकरण के लिए बीजों की किस्म या प्रकार की सिफारिश करना।

राष्ट्रीय बीज किस्म रजिस्टर: यह सभी प्रकार या किस्म के बीजों का रजिस्टर है जो रजिस्ट्रार के नियंत्रण और प्रबंधन में रखा जाता है।

केंद्रीय एवं राज्य बीज परीक्षण प्रयोगशालाओं की स्थापना: बीज विश्लेषकों एवं निरीक्षकों से सुसज्जित।

अपराध और दंड: इसमें तीन श्रेणियों, अर्थात् मामूली, लघु और बड़े में अपराधों के लिए कठोर दंड प्रावधानों का प्रस्ताव है, बड़े जुर्मों में 'किसी भी नकली बीज' की सप्लाई; बिना रजिस्टर्ड किस्म या किस्मों के बीजों की सप्लाई; और 'बिना डीलर या डिस्ट्रीब्यूटर या प्रोड्यूसर या बीज प्रोसेसिंग या प्लांट नर्सरी के तौर पर रजिस्ट्रेशन के बिज़नेस करना' शामिल है। इन बड़े जुर्मों के लिए, ड्राफ़्ट बिल में ज्यादा से ज्यादा 30 लाख रुपये की सज़ा और तीन साल तक की जेल का प्रपोज़ल है।

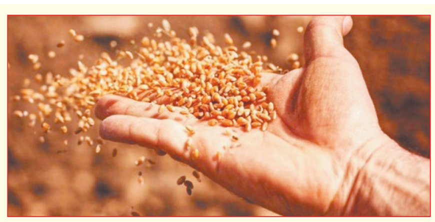

SEED Act VCU" में VCU का मतलब है "Value for Cultivation and Use" (खेती और उपयोग के लिए मूल्य)। यह शब्द मुख्य रूप से नए 'बीज विधेयक, 2025' (Draft Seeds Bill, 2025) के संदर्भ में इस्तेमाल किया जा रहा है, जो वर्तमान 'बीज अधिनियम, 1966' (Seeds Act, 1966) की जगह लेने के लिए प्रस्तावित है।

VCU का महत्व (Importance of VCU)

नए विधेयक के अनुसार:

- सभी बीज किस्में (पारंपरिक किसान किस्में और निर्यात-योग्य बीजों को छोड़कर) को बेचे जाने से पहले पंजीकृत होना अनिवार्य होगा।
- पंजीकरण के लिए, बीजों को कई स्थानों पर VCU परीक्षण (Value for Cultivation and Use testing) से गुजरना होगा।
- इस परीक्षण के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बीज खेत में अच्छी उपज, गुणवत्ता और संबंधित क्षेत्रों में खेती के लिए उपयुक्तता (performance and suitability) के न्यूनतम मानकों को पूरा करते हैं, तभी उन्हें बिक्री का लाइसेंस मिलेगा।

संक्षेप में, VCU वह वैज्ञानिक परीक्षण है जो प्रमाणित करता है कि कोई नई बीज किस्म किसानों के लिए वास्तव में उपयोगी और मूल्यवान है।

केंद्रीय कृषि मंत्रालय द्वारा बीज विधेयक 2025 का ड्राफ्ट जारी करने के साथ ही इसके समर्थन और आलोचना में टिप्पणियों से बीज बाजार में हलचल मची हुई है। जहां समर्थकों का मानना है कि यह विधेयक किस्मों के सार्वभौमिक पंजीकरण की दिशा में आगे बढ़ता है, तथा उन खामियों को दूर करता है जिनके कारण पुरानी प्रणाली के तहत घटिया गुणवत्ता वाले बीज बेचे जाते थे। यह डिजिटल पता लगाने की क्षमता पर जोर देता है, जिससे किसानों को बीज की प्रमाणिकता सत्यापित करने में मदद मिलती है और नियामकों को खराब लॉट के स्रोत का शीघ्र पता लगाने में मदद मिलती है। विधेयक में एक स्तरीय दंड प्रणाली का प्रस्ताव है, जिसमें नकली बीज बेचने जैसे गंभीर अपराधों के लिए भारी जुर्माना और संभावित कारावास का प्रावधान है, यह प्रत्येक किसान के अपने बीज उगाने, सुरक्षित रखने और उनका आदान-प्रदान करने के अधिकार की पुष्टि करता है, बशर्ते कि वे किसी ब्रांड नाम के तहत न बेचे जाएं।

वहीं आलोचक इस बात को लेकर चिंता जता रहे हैं कि इससे बायोपाइरेसी और कॉर्पोरेट प्रभुत्व को बढ़ावा मिल सकता है। यह विधेयक विदेशी संगठनों को मूल्य परीक्षण (वीसीयू) के लिए मान्यता प्रदान करता है। इससे जेनेटिकली इंजीनियर्ड बीज, जीन-एडिटेड किस्में, पेटेंटेड विदेशी हाइब्रिड के भारतीय बीज बाजार में प्रवेश पर निगरानी में कमी आ सकती है, जिससे बायोपाइरेसी का खतरा हो सकता है और किसानों पर निर्भरता बढ़ सकती है। सामुदायिक बीज संरक्षकों, किसान उत्पादक संगठन और अन्य किसान समूहों को वाणिज्यिक संस्थाओं के रूप में वर्गीकृत किए जाने की संभावना है, जिससे उन पर बड़े निगमों के समान नौकरशाही और डिजिटल आवश्यकताएं लागू होंगी। छोटे किसानों के लिए डिजिटल अनुपालन समस्या पैदा कर सकता है, और फसल खराब होने पर मुआवजा देने की सुलभ व्यवस्था नहीं हो सकती। वहीं विरोधियों को डर है कि इससे बायोपाइरेसी और कॉर्पोरेट प्रभुत्व को बढ़ावा मिल सकता है। यह कहा जा सकता है कि किसान समूहों, बीज विशेषज्ञों और नागरिक समाज संगठनों का मानना है कि प्रस्तावित कानून आम किसानों, खासकर पारंपरिक, रसायन-मुक्त खेती पर निर्भर किसानों की तुलना में बीज कंपनियों और कृषि आदान व्यवसाइयों के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

हालाँकि बीज विधेयक 2025 विधायी प्रक्रिया से पूर्व अभी अपने खेती और उपयोग के लिए मूल्य परीक्षण (वीसीयू) के दौर में है, लेकिन देखने वाली बात यह होगी कि भारतीय राजनीति में हमेशा संवेदनशील रहा किसान और कृषि का यह ऊंट किस करवट बैठता है।

भारत - रूस कृषि एवं उर्वरक सहयोग को नई गति

20 लाख टन यूरिया संयंत्र के समझौते से मजबूत साझेदारी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत और रूस के बीच कृषि एवं उर्वरक क्षेत्र में सहयोग को नई मजबूती मिली है। **केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और रूस की कृषि मंत्री सुश्री ओक्साना लुट** के बीच गत 4 दिसंबर को नई दिल्ली में हुई द्विपक्षीय बैठक में कृषि व्यापार, अनुसंधान, बीज, उर्वरक और बाजार पहुंच के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी।

रूस में 20 लाख टन/वर्ष क्षमता का यूरिया संयंत्र: बड़ा निवेश

द्विपक्षीय सहयोग को नई दिशा देते हुए रूस की यूरालकेम ने भारत की आईपीएल, आरसीएफ और एनएफएल के साथ रूस में 20 लाख टन वार्षिक क्षमता का यूरिया प्लांट स्थापित करने के लिए समझौता किया है।

कुल निवेश: 1.2 अरब डॉलर (लगभग रू. 10,790 करोड़), **प्लांट शुरू होने की संभावित अवधि:** 2027-28, **भागीदारी:** यूरालकेम 50%, IPL-22.5%, RCF-22.5%, NFL-5%, **अमोनिया आपूर्ति:** रूस की टोग्लियाटीआज़ोट कंपनी: भारत को उत्पादन का कम से कम 50% खरीदने का प्रथम अधिकार मिलेगा।

यह समझौता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, भारत में रूस के राजदूत डेनिस अलीपोव और रूस में भारत के राजदूत विनय कुमार की उपस्थिति में हुआ।

कृषि अनुसंधान में साझेदारी

बैठक में आईसीएआर और रूस के फेडरल सेंटर फॉर एनिमल हेल्थ के बीच कृषि अनुसंधान, नवाचार और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर हुए।

कृषि व्यापार और बीज-बागवानी निर्यात पर जोर: दोनों देशों ने कृषि व्यापार को संतुलित बनाने, भारतीय आलू, अनार और बीजों के निर्यात और खाद्यान्न व बागवानी उत्पादों के लिए नए बाजार अवसर विकसित करने पर सहमति जताई।

एरोपोनिक्स : हवा में आलू उगाने की तकनीक

इंदौर (कृषक जगत)। मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल द्वारा गत दिनों इंदौर के कृषि महाविद्यालय में एरोपोनिक्स यूनिट का शुभारम्भ किया गया। इस नई यूनिट में एरोपोनिक्स तकनीक से हवा में आलू उगाए जाएंगे। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर की वैज्ञानिक और एरोपोनिक्स परियोजना की प्रभारी डॉ. सुषमा तिवारी ने एरोपोनिक्स तकनीक पर विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. सुषमा तिवारी ने कृषक जगत को बताया कि एरोपोनिक्स में एरो का मतलब हवा और पोनिक्स का मतलब उत्पादन से है। हवा में आलू का उत्पादन करने की यूनिट का इंदौर में शुभारम्भ किया गया, जो हमारी तीसरी यूनिट है। इंदौर के अलावा ग्वालियर और सीहोर में भी दो यूनिट स्थापित हैं। जहां हवा में आलू का उत्पादन कर रहे हैं। एरोपोनिक्स की विशेषताएं बताते हुए उन्होंने कहा कि इस तकनीक से उत्पन्न आलू के बीज उच्च गुणवत्ता वाले होकर रोग रहित होते हैं। इसके पौधे लैब में बनते हैं, इस वजह से वायरस जनित बीमारी नहीं होने से उत्पादन में कोई परेशानी नहीं होती है। प्रक्रिया की जानकारी देते हुए कहा कि एक बार आलू यूनिट में लगता है,इसके बाद दो बार मिट्टी में लगाया जाता है। पहली बार में ही कई गुना उत्पादन बढ़ा लेते हैं, इसके बाद बीज किसानों को दिया जाता है।

इंदौर यूनिट की व्यवस्था की चर्चा करते हुए डॉ. तिवारी ने कहा कि ग्वालियर में गत वर्ष एरोपोनिक्स से आलू का उत्पादन शुरू हुआ है। इसीलिए ग्वालियर से प्रशिक्षित दो रिसर्च स्कॉलर को इंदौर में नियुक्त किया गया है। साथ में इंदौर की डॉ. अनिता साहू के अलावा तीनों यूनिट की प्रभारी होने के नाते मैं भी देखती हूं।

डॉ. तिवारी ने बताया कि राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर में टमाटर और गोभी का उत्पादन भी एरोपोनिक्स से शुरू किया गया है। अन्य फसलें मिट्टी में भी लगाई जा सकती हैं। जिसमें लागत कम आती है, जबकि एरोपोनिक्स तकनीक में बिजली के खर्च के अलावा पोषक तत्व डालने से लागत बढ़ जाती है। लेकिन आलू की सफलता दर एवं लाभ अधिक होने से इस फसल पर ध्यान केंद्रित किया है। हालांकि ऑफ सीजन में बाकी फसलों में भी इसका उपयोग किया जा सकता है।

इंदौर में 12 से 14 दिसंबर तक जैविक महोत्सव का आयोजन

इंदौर (कृषक जगत)। इंदौर में 12 से 14 दिसंबर तक ग्रामीण हाट बाजार, ढक्कन वाला कुआं पर तीन दिवसीय जैविक महोत्सव आयोजित किया जाएगा। कलेक्टर श्री शिवम वर्मा के निर्देशन में हो रहे इस मेले में किसान अपने जैविक और प्राकृतिक खेती आधारित उत्पादों का सीधा विक्रय व प्रदर्शन करेंगे। आयोजन आत्मा परियोजना, कृषि विभाग और विभिन्न ऑर्गेनिक संस्थाओं के संयुक्त प्रयास से किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य इंदौर को स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी अग्रणी बनाना है।

महोत्सव चार मुख्य हिस्सों में विभाजित रहेगा

1. **मिलेट्स प्रदर्शनी:** कोदो, कुटकी, रागी, कंगनी आदि श्री अन्न की जानकारी एवं बिक्री।
2. **तिलहन प्रदर्शनी:** सरसों, तिल्ली, मूंगफली, अलसी जैसे तिलहनों से निकले शुद्ध देशी तेलों का प्रदर्शन और बिक्री।
3. **ज्ञान सत्र:** विशेषज्ञों द्वारा जैविक खेती, तिलहन प्रसंस्करण और मिलेट्स आधारित नवाचारों पर मार्गदर्शन।
4. **जैविक फूड स्टॉल:** दाल-पानिया, मिलेट खिचड़ी, पोहे, गिर गाय के दूध की जलेबी जैसे स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन।

यह महोत्सव किसानों को बेहतर बाजार दिलाने और नागरिकों को जैविक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करेगा।

फोटो गैलरी

कार्य-मंत्रणा

विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर के प्रतिकक्ष में आयोजित कार्य-मंत्रणा समिति की बैठक में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शामिल हुए।

स्वागत

उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने मध्य प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र के प्रथम दिन विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर का उनके कक्ष में भेंट कर स्वागत किया।

विश्व एड्स दिवस

विश्व एड्स दिवस कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने एचआईवी रोकथाम और जागरूकता को बताया 2030 लक्ष्य प्राप्ति की कुंजी, संक्रमित व्यक्तियों के लिए 'एआरटी केंद्रों की सेवाएँ मजबूत करने पर जोर।' कार्यक्रम में चिकित्सा शिक्षा प्रमुख सचिव श्री संदीप यादव तथा आयुक्त श्री तरुण राठी भी उपस्थित थे।

समीक्षा बैठक

भोपाल। 'मध्यप्रदेश सहकारिता विभाग मिशन कर्मयोगी में देश में बना अग्रणी - सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने एचआर विशेषज्ञ डॉ. आर. बाला सुब्रमण्यम के साथ की समीक्षा बैठक, विभाग के उत्कृष्ट क्रियान्वयन को मिली सराहना।'

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

पशु चिकित्सकों की 'वन हेल्थ' पर एक दिवसीय संगोष्ठी

इंदौर (कृषक जगत)। नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय और पशुपालन एवं डेयरी विभाग मप्र के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय महू में आयोजित किया गया। संगोष्ठी का विषय 'वन हेल्थ के नजरिए से वैश्विक स्वास्थ्य की सुरक्षा में पशु चिकित्सकों के लिए अवसर एवं चुनौतियां' था। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. मनदीप शर्मा, आयोजन सचिव डॉ. नीतू राजपूत, महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. ब्रह्म प्रकाश शुक्ला, डॉ.एस.सी. दुबे, डॉ. निशांत खरे, डॉ. राजेश चाहोता, डॉ. हर्षद मुरूगकर ने संगोष्ठी के विषय पर विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी में पशुपालन एवं डेयरी विभाग मध्य प्रदेश के 100 पशु चिकित्सकों, महाविद्यालय के 50 प्राध्यापक एवं 200 से अधिक छात्र एवं छात्राओं ने हिस्सा लिया। सत्र का संचालन डॉ. जॉयसी जोगी तथा आभार डॉ. पीडीएस रघुवंशी एवं डॉ. अशोक पाटिल ने माना। संगोष्ठी के आयोजन में डॉ. राकेश शारदा, डॉ. गायत्री देवांगन, डॉ. स्वाति कोली, डॉ. राखी गांगिल, डॉ. योगिता पांडे, डॉ. कविता रावत, डॉ. रेशमा जैन, डॉ. श्वेता राजोरिया, डॉ. दानवीर सिंह यादव, डॉ. नरेश कुरेचिया, डॉ. जितेंद्र सिंह यादव की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पशुपालन एवं डेयरी विभाग मध्य प्रदेश के सहयोग से आयोजित इस राष्ट्रीय सेमिनार के लिए विभाग के संचालक डॉ. पी.एस. पटेल और प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. तेजिंदर बग्गा को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र सिवनी में शा.उ.मा.वि. ताखलाकला (वि.ख. बरघाट) के छात्र-छात्राएँ- डॉ. शेखर सिंह बघेल, डॉ. केपीएस सैनी, डॉ. के.के. देशमुख, डॉ. एन.के. सिंह और इंजी. कुमार सोनी से कृषि विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान प्राप्त करते हुए।

केव्हीके में सम्मान निधि का प्रसारण

नीमच (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केन्द्र में पीएम लाईव कार्यक्रम अंतर्गत किसान सम्मान निधि की 21वीं किश्त के हस्तांतरण का सीधा प्रसारण कोयम्बटूर, तमिलनाडू से दिखाया गया। कार्यक्रम को नीमच, जावद एवं मनासा विकासखण्डों के किसानों ने देखा। कार्यक्रम पश्चात किसानों ने प्राकृतिक कृषि पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। केन्द्र के प्रमुख डॉ. सी. पी. पचौरी ने कार्यक्रम की रुपरेखा बताते हुए जिले के किसानों को प्री रबी तकनीक की नवीतम जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. एस. एस. सारंगदेवोत,डॉ. शिल्पी वर्मा, डॉ. जे. पी. सिंह भी मौजूद थे।

जबलपुर में साप्ताहिक जैविक हाट बाजार

जबलपुर (कृषक जगत)। शहर में प्रत्येक रविवार को जिला प्रशासन व कृषि विभाग के द्वारा कृषि उपज मंडी प्रांगण में जैविक हाट लगाया जायेगा। हाट का शुभारंभ जिला पंचायत सीईओ श्री अभिषेक सिंह गहलोत के द्वारा किया गया। साप्ताहिक जैविक हाट लगने से कृषकों में प्राकृतिक एवं जैविक खेती के लिए रुझान बढ़ेगा एवं विभाग के माध्यम से जैविक उत्पाद के लिए बाजार मिलेगा। यहां साग-सब्जी, फल, अनाज उपलब्ध रहेंगे, साथ ही किसानों को अपने उत्पाद के अच्छे दाम मिलेंगे। इस अवसर पर उपसंचालक कृषि श्री एस. के. निगम, जैविक खेती प्रचारक श्री रजनीश दुबे प्राकृतिक खेती करने वाले कृषक सर्वश्री विनय सिंह फुलर,केपी सिंह, अर्चना सोनी, अंशु माला धगट आदि उपस्थित थे।

गुना में खाद संकट से राहत

2675 मीट्रिक टन यूरिया किसानों के लिए पहुंचा, वितरण शुरू

गुना (कृषक जगत)। मध्यप्रदेश के गुना जिले में किसानों को खाद की कमी का सामना न करना पड़े, इसके लिए केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री तथा गुना सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया की पहल पर आज 2675 मीट्रिक टन खाद गुना पहुँच चुकी है। यह पूरी खेप केंद्र एवं राज्य सरकार के समन्वित सहयोग से उपलब्ध कराई गई है। जिला प्रशासन द्वारा किसानों की सुविधा को देखते हुए आवश्यकतानुसार सहायता डेस्क, पानी और पंडाल आदि की व्यवस्था भी की गई है।

कृषकों के लिए आज 2675 मीट्रिक टन यूरिया का रेक गुना पहुँचा है। खाद की यह खेप अब जिला प्रशासन और संबंधित अधिकारियों के पर्यवेक्षण में किसानों तक सुचारु, पारदर्शी और समयबद्ध तरीके से पहुँचाई जा रही है, ताकि किसी भी किसान को अनावश्यक प्रतीक्षा या कठिनाई न हो।

71 सोसायटियों को 1778 मीट्रिक टन खाद

कलेक्टर श्री किशोर कुमार कन्याल ने बताया कि जिला प्रशासन ने वितरण के लिए पूरी व्यवस्था की तैयार कर ली है जिसके तहत 1778 मीट्रिक टन यूरिया 71 प्राथमिक कृषि साख सोसायटियों के माध्यम से किसानों को वितरित होगा और शेष मात्रा का वितरण निजी अधिकृत डीलरों के माध्यम से किया जाएगा, ताकि किसी किसान को प्रतीक्षा न करनी पड़े। इसके अतिरिक्त एनएफएल से प्राप्त खाद भी लगातार डबल लॉक केंद्रों में पहुँच रही है, जिससे किसानों को तीनों माध्यम समिति, डबल लॉक केंद्र और निजी दुकानों पर पर्याप्त खाद उपलब्ध रहे।

समस्या – मैं टमाटर लगाना चाहता हूं, अच्छे बीज कहां मिलेंगे, तकनीकी भी बतायें।

– उमराव सिंह कुशवाह

समाधान– *आप टमाटर लगाना चाहते हैं आपने अच्छी जाति के बीज के विषय में जानकारी चाही तथा उत्पादन तकनीकी पर भी मार्गदर्शन चाहते हैं आप तो कृषक जगत के सदस्य हैं आपकी चाहे अनुसार बिन्दुवार जानकारी निम्नानुसार है।*

- *नर्सरी लगाने का समय नवम्बर–दिसम्बर तथा पौध रोपाई दिसम्बर–जनवरी।*

- *उन्नत किस्म पूसा रूबी, पूसा 120, शीतल, अर्का, सौरभ, काशी अमृत आदि।*
- *सामान्य किस्मों का 300–400 ग्राम तथा संकर किस्म का 150–200 ग्राम बीज पर्याप्त होगा।*
- *यूरिया 260 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 375 किलो तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 100 किलो/हेक्टर की दर से डालें।*

अच्छे बीज के लिये निम्न पते पर सम्पर्क करें।

- *उपसंचालक उद्यानिकी, विदिशा*

समस्या – क्या हमारे यहां औषधि फसल सर्पगंधा लगा सकते हैं, कब लगायें तकनीकी जानकारी दें।

– यमुना प्रसाद वर्मा

समाधान– *आपका रुझान औषधि फसलों की तरफ हो रहा है यह अनुकरणीय है आप सर्पगंधा अच्छी तरह से लगा सकते हैं। और लाभ कमा सकते हैं। निम्न तकनीकी आपके एवं अन्य पाठकों के लिये*

- *दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है लाल भूमि में भी लगाया जा सकता है।*

- *जातियों में जवाहर सर्पगंधा 1 जो प्रदेश में विकसित की गई है लगायें।*
- *6–8 किलो बीज/हे. की दर से पर्याप्त होगा। बीज को 12 घंटे पानी में डुबोकर रखें तथा सुखाकर 3 ग्राम थाईरम/किलो बीज से उपचारित करें।*
- *लगाने का उपयुक्त समय मई है। बीज को पहले नर्सरी में डालें 40–50 दिनों बाद उनको मुख्य खेत में रोपें।*
- *यूरिया 40 किलो, सिंगल सुपर फास्फेट 250 किलो तथा म्यरेट ऑफ पोटाश 60 किलो/हे. की दर से डालें।*
- *4–5 सिंचाई आवश्यकतानुसार दी जाये।*

समस्या– राई–सरसों तथा अन्य तिलहनी फसलों में क्या सिंचाई लाभदायक होती है यदि हां, तो बतायें कितनी और कब।

– जयदेव राव, मुलताई

समाधान– *राई–सरसों या अन्य तिलहनी फसलों में सिंचाई के विषय में आपने पूछा है आमतौर पर दलहन/तिलहन को वर्षा आधारित स्थिति में लगाया जाता है। राई–*

सरसों अलसी–कुसुम सामान्य रूप से रबी तिलहनी फसलें होती हैं। जिसमें से कुसुम (करडी) की जड़ें लम्बी गहराई तक जाती हैं। इन फसलों को यदि एक पानी मिल जाये तो उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। अनुसंधान आधारित परिणामों पर राई–सरसों में पहली सिंचाई बुआई के 30–40 दिनों बाद तथा दूसरी फली बनते समये दी जाना चाहिये। अलसी में भी इसी प्रकार से सिंचाई करना हितकर होगा। कुसुम की फसल में भी पहली सिंचाई बुआई के 30–40 दिनों बाद तथा दूसरी फूल अवस्था में दें तो अच्छा लाभ मिल सकता है। सिंचाई का स्त्रोत निश्चित हो तो बुआई पूर्व सिफारिश के आधार पर उर्वरक उपयोग यदि नहीं किया गया हो तो सिंचाई का पूर्ण लाभ नहीं मिल सकेगा।

समस्या– फास्फोरस की कमी के सामान्य लक्षण क्या हैं?

समाधान– फास्फोरस की कमी से पौधों की पत्तियों का रंग बैंगनी या गहरा हो जाता है। पुरानी पत्तियां आरम्भ में पीली और बाद में लाल–भूरी पड़ जाती हैं। पत्तियों के शिरे सूखने लगते हैं। पौधों की वृद्धि दर प्रतिदर कम हो जाती है। पौधे बौने,पतले सीधे तथा कम पत्तियों वाले होते हैं। कमी में जड़ों का विकास कम होता है, फुटाव कम होता है। बालियां दाने कम बनते हैं। दाने देर से बनते हैं। फसल देर से पकती है। दाने की अपेक्षा भूसे का अनुपात बढ़ जाता है। पौधों पर रोगों का हमला अधिक होता है। दलहनी फसलों में जीवाणुओं द्वारा नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कम होता है।

समस्या– पोटेशियम का पौधों के पोषण में क्या कार्य है?

समाधान– पोटेशियम, पत्तियों में शर्करा और स्टार्च के निर्माण की कुशलता वृद्धि करता है। यह दोनों के आकार तथा भार को बढ़ाता है। नाइट्रोजन की दक्षता को बढ़ाता है। पोटेशियम कोशिका पारगम्यता में सहायक होता है कार्बोहाइड्रेट के स्थानान्तरण में सहायता करता है और पौधे में लोहे को अधिक चल रखता है। पोटेशियम पौधों में रोगों के प्रति प्रतिरोधिता को बढ़ाता है। प्रोटीन संश्लेषण को बढ़ाता है। पौधे की सम्पूर्ण जल व्यवस्था को नियंत्रित करता है और पौधों को पीले तथा सूखे से रक्षा करता है। पौधों के तने को कठोरता प्रदान करके गिरने से बचाता है। इसके अतिरिक्त पौधों की विभिन्न क्रियाओं को नियंत्रित करने वाले एन्जाइमों को संचालित करता है।

समस्या– रसायनिक उर्वरक श्रेष्ठ है या अन्य जैविक खादें। इनमे से कौन सी खाद इस्तेमाल की जाए?

समाधान– क्या उर्वरकों के निरन्तर प्रयोग से भूमि की दशा बिगड़ जाती है? जैविक खादें और उर्वरक ही एक-दूसरे के सहयोगी हैं। जोकि एक-दूसरे की फसल द्वारा प्रयोग करने की क्षमता बढ़ाते हैं। उर्वरकों को असंतुलित मात्रा, भूमि की किस्म के अनुसार सही उर्वरक न प्रयोग करने से भूमि की दशा थोड़ी बिगड़ सकती है। परन्तु इन दोनों ही बातों का ध्यान रखें तो उर्वरकों के निरन्तर प्रयोग से भी दशा पहले की अपेक्षा सुधर सकती है। अकेले जैविक खादों द्वारा पोषक तत्वों की पूरी मात्रा देना असम्भव ही है क्योंकि उनको पोषक तत्वों की आवश्यकता पूर्ति करने की क्षमता सीमित ही है। दूसरी ये अधिक मात्रा में उपलब्ध भी नहीं है। तीसरे इनका ढोना और खेत में डालना काफी महंगा पड़ेगा हम तो यही कहेगे की थोड़ी मात्रा में जैविक खाद सभी खेतों में प्रयोग करें और पोषक तत्वों की पूर्ति उर्वरकों से करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95 कोड : 016
सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 75 कोड : 017
मशरूम एक लाभ अनेक रु. 45 कोड : 019
मिर्च की उन्नत खेती रु. 55 कोड : 020
केला उत्पादन रु. 70 कोड : 025
गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 75 कोड : 027

पपीता रु. 55 कोड : 031
अदरक रु. 55 कोड : 032
फलों की खेती रु. 75 कोड : 040
सजाएं फूलों से बगिया रु. 65 कोड : 041
घर की बगिया रु. 95 कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं
016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050
नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें
संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.
कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य/शिक्षण

सर्दियों में स्वस्थ रहने के सूत्र

सर्दियों को स्वास्थ्य के लिहाज से बहुत अनुकूल मौसम माना जाता है। इस सीजन में पाचन शक्ति काफी मजबूत रहती है, भूख बढ़ती है, संक्रमण फैलाने वाले वायरस निष्क्रिय हो जाते हैं तथा व्यक्ति तुलनात्मक रुप से अधिक स्वस्थ रहता है लेकिन सर्दियां हृदय, अस्थमा, जोड़-हड्डी तथा एलर्जी के रोगियों के लिये कई चुनौतियां पैदा करती है जिनका इस मौसम में खास ध्यान रखने की जरुरत होती है। सर्दियों में रक्त धमनियां सिकुड़ने के कारण सर्वाधिक हृदयघात होते हैं। सर्दी को सबसे अधिक स्वास्थ्यकारी मौसम कहा जाता है। यहां सर्दियों में स्वस्थ रहने के सात नुस्खे दिये जा रहे है जिनका अनुसरण कर शरद ऋतु का पर्याप्त आनन्द लिया जा सकता है।

वार्म ड्रेसअप – इस मौसम में कभी सर्दी कम तो कभी ज्यादा होती है। इस लिये कपड़े पहनने में लापरवाही न करें। सर्दी कम रहने पर भी गर्म कपड़े से परहेज न करें। सिर, हाथ तथा पैरों को कवर करने का खास ख्याल रखें क्योंकि शरीर में ठण्ड का प्रकोप सबसे पहले सिर, पैर, नाक,छाती व कान से शुरू होता है।

गरम भोजन व पेय – भारतीय परम्पराओं व रीति-रिवाजों में मौसम के हिसाब से खान-पान निर्देशित है। सर्दियों में शीतल पेय, आइसक्रीम, दही की लस्सी आदि ठण्डे पदार्थों को सेवन पूरी तरह से त्यागना चाहिए। इसके स्थान पर कॉफी, दूध, छाछ, सूप, हलवा आदि ऊर्जावान खाद्य व पेय पदार्थों का सेवन करें।

लहसुन एक औषधीय पदार्थ है– जिसके प्रयोग से छोटी-बड़ी बीमारी में लाभ होता है। लहसुन का नियमित सेवन हृदय व एलर्जी के रोगियों के लिये अमृत समान लाभकारी है। लहसुन में पाया जाने वाला सल्फाइड्स रक्तचाप कम करने में मदद करता है। लहसुन वायरस और बैक्टीरिया से लड़ने के लिये भी ऊर्जा प्रदान करता है। इसके एंटीबैक्टीरियल गुण इन्फेक्शन से लड़ने में मदद करते हैं। यह सर्दी, जुकाम और कफ समस्या का कारगर इलाज है। यह एक चमत्कारिक गुणों वाली औषधि है। सर्दियों में मेथी दाने का नियमित इस्तेमाल अस्थमा, गठिया, एसिडिटी, कफ आदि की कारगर औषधि है। मेथी रक्त ग्लूकोज और कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा को नियंत्रित करती है। डायबिटीज रोगियों के लिए बहुत ही लाभकारक माना गया है।

मदिरा से परहेज – कुछ लोग सर्दी से बचने के लिये मदिरा का सहारा लेते हैं लेकिन ध्यान रखें कि मदिरा पी कर कभी भी बाहर नहीं घूमना चाहिए। मदिरा से शरीर में गरमाहट आती है परन्तु खुले में घूमने पर शरीर का तापमान असामान्य हो सकता है जो किसी बड़े स्ट्रोक का कारण बन सकता है।

नियमित शरीर की सफाई – सर्दियों में लोग नहाने से बचते हैं। पानी से दूरी बनाये रखते हैं। जबकि इस मौसम में गुनगुने पानी से हर दिन स्नान करना चाहिए। इससे हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत रहता है। सर्दियों में शरीर की उपरी त्वचा का तापमान ठण्डा व अन्दरुनी गरम रहता है। सर्दियों में रक्त धमनियां सिकुड़ जाती हैं। स्नान से त्वचा चेतन होती है तथा बैक्टीरिया से मुक्ति मिलती है। गर्म पानी में तुलसी के पत्ते, अजवायन, मेथी आदि पका कर स्नान करने से त्वचा खुश्क व मुरझाती नहीं हैं।

खुली हवा से बचें– सर्दियों की हवा में नमी का प्रवाह रहता है। ठण्डी हवा के संपर्क में आने से छाती का जल कफ के रुप में जम जाता है। इससे छाती, गले तथा नाशिका में संक्रमण फैलता है। जिसे जुकाम व नजला कहते हैं। इसके कारण बुखार, निमोनिया तथा खांसी हो जाती है। इससे बचने के लिसे जरुरी है कि खुली हवा के सम्पर्क में आने से जितना बचा जाये उतना ही अच्छा है।

व्यायाम करें, चुस्त रहें – सर्दियों में निष्क्रियता सबसे खतरनाक होती है। इस मौसम में खूब शारीरिक परिश्रम करना चाहिए तथा नियमित व्यायाम करें। इससे शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास होता है तथा वातावरण में फैले बैक्टीरिया से लड़ने की शक्ति मिलती है। सर्दियों में अधिकांश लोग घरों के अन्दर दुबक कर बैठे रहते हैं जिससे उनको भोजन पचाने में कठिनाई हो सकती है। यही नहीं इस मौसम में सर्वाधिक गरिष्ठ पदार्थों का सेवन किया जाता है जिसके कारण पेट बाहर आ जाता है।

धूप का भरपूर आनन्द लें – सर्दियों की धूप वैसे भी काफी सुहावनी लगती है। धूप से विटामिन डी भरपूर मात्रा में मिलता है जो त्वचा के लिये सबसे अनुकूल आहार है। धूप से सुस्त पड़ी त्वचा को ऊर्जावान आहार मिलता है। इस लिये सुबह उगते सूर्य की किरणों का भरपूर आनन्द लेना नहीं भूलें।

इससे जहां मन को सुकून मिलता है वहीं शरीर को प्राकृतिक ऊर्जा मिलती है। रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ती है। सर्दियों में अधिक समय तक अंधेरे में नहीं रहना चाहिए। इससे हमारा इम्यून सिस्टम बिगड़ सकता है।

दिल की हिफाजत के लिए विशेषज्ञों के टिप्स

यह एक आश्चर्य जनक तथ्य है कि पिछले कुछ दशकों में कोरोनरी हार्ट बीमारी भारत में एक महामारी की तरह फैली है। एक अनुमान के मुताबिक आज की तारीख में भारतवर्ष में लगभग 3 से 5 करोड़ लोग दिल की बीमारियों के शिकार है और जिनकी गिनती में प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। नई दिल्ली स्थित साओल हार्ट सेंटर के निदेशक डॉ. बिमल छाजेड़ का कहना है कि हृदय धमनियों में पैदा होने वाले अवरोध की स्थिति को जीवन शैली में बदलाव तथा हृदय रोग से संबंधित सभी खतरनाक कारकों को नियंत्रित कर पलटा जा सकता है। ऐसा करके आप न सिर्फ बाई पास सर्जरी या एंजीयोप्लास्टी से बच सकते हैं, बल्कि इन सर्जरियों के बाद फिर से धमनियों में रूकावट पैदा होने की संभावना को भी खत्म करवा सकते हैं। यहां उन दस उपायों से अवगत करा रहे हैं, ताकि हृदय की बीमारियों को रोका जा सके–

अपने कोलेस्ट्रोल स्तर को 130 एमजी/डीएल तक रखिये– कोलेस्ट्रोल के मुख्य स्रोत जीव उत्पाद हैं, जिनसे जितना अधिक हो बचने की कोशिश करें। अगर आपके यकृत यानी लीवर में अतिरिक्त कोलेस्ट्रोल का निर्माण हो रहा हो, तब आप को कोलेस्ट्रोल घटाने वाली दवाओं का सेवन करना पड़ सकता है।

भोजन बगैर तेल के बनाये, लेकिन मसाले का प्रयोग बंद नहीं करें– मसाले हमें भोजन का स्वाद देते हैं न कि तेल का। हमारे 'जीरो ऑयल' भोजन निर्माण विधि का प्रयोग करें और हजारों हजार जीरो ऑयल भोजन स्वाद के साथ समझौता किये बगैर तैयर करें। तेल ट्रिगलिराइडस होते हैं और रक्त स्तर 130 एमजी 1 डीएल के नीचे रखा जाना चाहिए।

तनावों को कम करें– इससे आप को हृदय रोग को रोकने में मदद मिलेगी क्योंकि मनोवैज्ञानिक तनाव हृदय की बीमारियों की मुख्य वजह हैं। इससे आप को बेहतर जीवन स्तर बनाये रखने में भी मदद मिलेगी।

हमेशा ही रक्त दबाव को 120/ 80 एमएमएचजी के आसपास रखें – बढ़ा हुआ रक्त दबाव विशेष रूप से 130/90 से ऊपर आपके ब्लॉकेज (अवरोध) को दुगनी रफ्तार से बढ़ायेगा। तनाव में कमी, ध्यान, नमक में कमी तथा यहां तक कि हल्की दवाएं लेकर भी रक्त दबाव को कम करें।

अपने वजन को सामान्य रखें– आप का बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) को 25 से नीचे रहना चाहिए। इसकी गणना आप अपने किलोग्राम वजन को मीटर में अपने कद के स्ववायर के साथ घटाकर कर सकते है। तेल नहीं खाकर एवं निम्न रेसे वाले अनाजों तथा उच्च किस्म के सलादों के सेवन द्वारा आप अपने वजन को नियंत्रित कर सकते हैं।

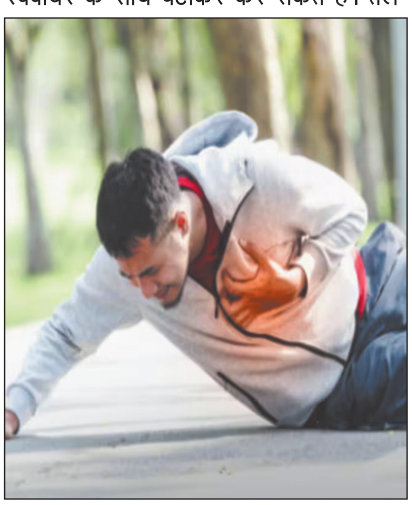

टहलना जरूरी– टहलने की रफ्तार इतनी होनी चाहिए जिससे सीने में दर्द नहीं हो और हांफे भी नहीं। यह आप के अच्छे कोलेस्ट्रोल यानी एचडीएल कोलेस्ट्रोल को बढ़ाने में आपकी मदद कर सकता है।

हल्के योग व्यायाम करें– यह आपके तनाव, तथा रक्त दबाव को कम करेगा। आपको सक्रिय रखेगा और आपके हृदय रोग को नियंत्रित करने में मददगार साबित होगा।

भोजन में रेसे और एंटी ऑक्सीडेन्ट्स– भोजन में अधिक सलाद, सब्जियों तथा फलों का प्रयोग करें। ये आपके भोजन में रेसे और एंटी ऑक्सीडेन्ट्स के स्रोत हैं और एचडीएल या गुड कोलेस्टरोल को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

हार्ट अटैक से पूरी तरह बचाव – डॉ. बिमल छाजेड़ के अनुसार हार्ट अटैक से बचने का सबसे आसान संदेश है ''और अधिक रुकावटें न होने दें। यदि आप इन्हें घटा सकते हैं, तो हार्ट अटैक कभी नहीं होगा।'' यह कुछ ऐसा है, जैसे कि नोटों के बंडल के ऊपर रबर बैंड की सुरक्षा। यदि आप रबर बैंड में ज्यादा से ज्यादा नोट डालते ही जाएंगे, तो एक दिन ऐसा होगा जब रबर बैंड टूट जाएगा। यही परिस्थिति हार्ट अटैक की भी होती है, जहां झिल्ली टूट जाती है। अब यदि आप और नोट डालना बंद कर देंगे तो रबर नहीं टूटेगा। इसके आगे यदि आप हर रोज इस बंडल में से एक-दो नोट निकालते रहेंगे तो भी रबर बैंड कभी नहीं टूटेगा। यही नियम हार्ट अटैक से बचाव में भी लागू होता है। पर्याप्त रूप से हृदय की बीमारियां पैदा करने वाले कारकों को नियंत्रित करके हार्ट अटैक से बचा जा सकता है।

पानी प्रयोग की विधि क्या

सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, खून की कमी, मोटापा, बेहोशी, दमा, खांसी, लीवर की कमजोरी, पेशाब की बीमारी, गैस, कब्ज, एसीडिटी, कमजोरी, आंख की बीमारी, मानसिक रोग, महिलाओं को होने वाली बीमारियां एवं शरीर में उत्पन्न होने वाली कई नई-पुरानी व्याधियों को दूर करने के लिए यह सादी-सरल विधि है। भारत जैसे गरीब देश के लिए तो यह विधि बिना पैसा खर्च की चमत्कारी पद्धति सिद्ध हो सकती है। कमी है तो बस इसके जनसाधारण के बीच प्रसार की। सुबह उठकर बिस्तर में बैठ जाएं और चार बड़े ग्लास भरकर (लगभग एक लीटर) पानी एक ही समय एक साथ पी जाएं। ध्यान रहे कि पानी पीने के पहले मुंह न धोएं, न ब्रश करें तथा शौचकर्म भी न करें। पानी पीने के बाद थूकें नहीं। पानी पीने के पौन घंटे बाद आप ब्रश/ दातून, मुंह धोना, शौचकर्म इत्यादि नित्यकर्म कर सकते हैं। जो व्यक्ति बीमार या कमजोर काया के हैं और वे एक साथ चार ग्लास पानी नहीं पी सकते तो उन्हें शुरूआत एक-दो ग्लास पानी से करना चाहिए तथा धीरे-धीरे चार ग्लास तक बढ़ाना चाहिए।

पाक्षिक पंचांग

8 से 21 दिसम्बर 2025
विक्रम संवत् 2082
पौष कृष्ण 4 से पौष शुक्ल 1 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार	
08	दिसम्बर	सोम	पौष कृष्ण	4	गणेश चतुर्थी व्रत
09	दिसम्बर	मंगल	----------	5	
10	दिसम्बर	बुध	----------	6	
11	दिसम्बर	गुरु	----------	7	
12	दिसम्बर	शुक्र	----------	8	रुक्मणी अष्टमी
13	दिसम्बर	शनि	----------	9	
14	दिसम्बर	रवि	----------	10	
15	दिसम्बर	सोम	----------	11	सफला एकादशी
16	दिसम्बर	मंगल	----------	12	खरमास प्रारंभ
17	दिसम्बर	बुध	----------	13	प्रदोष व्रत
18	दिसम्बर	गुरु	----------	14	शिव चतुर्थी व्रत
19	दिसम्बर	शुक्र	----------	30	अमावस
20	दिसम्बर	शनि	पौष शुक्ल	1	
21	दिसम्बर	रवि	----------	1	

पराली, सिंचाई व उर्वरक की समस्याएँ उभरकर सामने-सर्वे रिपोर्ट

भोपाल (कृषक जगत)। मध्य प्रदेश के सतना, पन्ना और सिवनी जिलों में पराली जलाने की समस्या को समझने के लिए कृषि वैज्ञानिकों ने 15 दिन का सर्वेक्षण पूरा किया है। यह अध्ययन 'भारत-इंडिया जोड़ो अभियान' के तहत किया गया। सर्वे का उद्देश्य रिलायंस फाउंडेशन द्वारा तैयार किए गए जलवायु उत्तरदायित्व सूचकांक को और बेहतर बनाना है, जिसे 15 दिसंबर को मुंबई में जलवायु विशेषज्ञों के सामने प्रस्तुत किया जाएगा।

सर्वे में पराली जलाना, आवारा व जंगली जानवर, बिजली कटौती, सिंचाई की कमी और उर्वरक उपलब्धता जैसी मुख्य समस्याएँ सामने आईं। सकारात्मक रूप से, किसानों द्वारा ड्रिप सिंचाई, जीरो-टिल सीड ड्रिल, आधुनिक हार्वेस्टर और फसल विविधीकरण जैसी तकनीकों को अपनाने की प्रवृत्ति दिखाई दी। ग्राम पंचायतों के तालाब और बलराम तालाब सिंचाई के प्रभावी साधन साबित हो रहे हैं। सर्वे टीम में डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के वैज्ञानिक डॉ. सुधानंद प्रसाद लाल और महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के पीएचडी शोधार्थी अक्षय सिंह, आदित्य सिंह और जैकी वर्मा शामिल थे।

अध्ययन में किसानों, कृषि अधिकारियों, आत्मा परियोजना, पशुपालन और मत्स्य विभाग सहित विभिन्न हितधारकों की राय शामिल की गई। तैयार किया जा रहा सूचकांक देशभर में कृषि विकास और जलवायु लचीलापन मापने का एक उपयोगी उपकरण बन सकता है।

इंदौर में 'प्लास्ट इंडिया 2026' का भव्य लॉन्च, उद्योग जगत में उत्साह

इंदौर (कृषक जगत)। देश की सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक प्रदर्शनी 'प्लास्ट इंडिया 2026' के आयोजन की घोषणा के लिए इंदौर में लॉन्च इवेंट आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में इंडियन प्लास्ट पैक फोरम के अध्यक्ष सर्वश्री सचिन बंसल, चेयरमैन जाहिद शाह, उद्योगपति राजेंद्र गुप्ता, प्रवीण अग्रवाल, संजीव सचदेवा सहित बड़ी संख्या में उद्योगपति शामिल हुए। प्लास्ट इंडिया 2026 का आयोजन 5 से 10 फरवरी 2026 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में होगा।

लॉन्च कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव ने सिंगल यूज़ प्लास्टिक के विकल्पों, उपयोगी प्लास्टिक उत्पादों और इंदौर की स्वच्छता मॉडल पर अपने अनुभव साझा किए। इस अवसर पर इंडियन प्लास्ट पैक फोरम के अध्यक्ष श्री बंसल ने उद्योग नीति, उपलब्ध सब्सिडी और नई तकनीकों के महत्व पर जानकारी दी। मुंबई से आए प्लास्ट इंडिया फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने विस्तृत एवी प्रेजेंटेशन के जरिए इंडस्ट्री को मेगा एक्सपो में भाग लेने का आमंत्रण दिया। आयोजन के बाद इंदौर के उद्योग जगत में इस बड़े एक्सपो को लेकर उत्साह दिखाई दिया।

पांढुर्ना के किसान-व्यापारी ने लौटाए अतिरिक्त 4 लाख, ईमानदारी की मिसाल

(उमेश खोड़े, पांढुर्ना, कृषक जगत)। आज के समय में जहां धोखाधड़ी आम होती जा रही है, वहीं पांढुर्ना के व्यापारी और किसान श्री राजेंद्र नामदेवराव कवड़े ने ईमानदारी की मिसाल पेश की है। बैंक ऑफ महाराष्ट्र, पांढुर्ना शाखा से 4 लाख रुपये निकालते समय कैशियर की गलती से उन्हें 4 लाख रुपये अतिरिक्त मिल गए थे। घर पहुंचकर रकम की जांच करने पर गलती का पता चलते ही उन्होंने तुरंत बैंक जाकर पूरी राशि लौटा दी। बैंक प्रबंधन को भी इस गलती की जानकारी नहीं थी। श्री कवड़े के इस कदम से बैंक प्रबंधक और कैशियर आश्चर्यचकित रह गए। कैश वापस पाकर युवा कैशियर भावुक हो गया और बार-बार धन्यवाद देता रहा। स्थानीय लोगों और व्यापारियों में श्री कवड़े की ईमानदारी की व्यापक प्रशंसा हो रही है।

कमियां पाए जाने पर खाद-बीज विक्रेताओं को नोटिस

ग्वालियर (कृषक जगत)। जिले के किसानों को मानक खाद एवं बीज उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा के अनुरूप निजी खाद- बीज की दुकानों का लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। इस कड़ी में कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर उप संचालक कृषि विभाग द्वारा चीनौर, भितरवार व डबरा स्थित खाद व बीज की आठ निजी दुकानों का औचक निरीक्षण किया गया। इनमें से पाँच खाद- बीज दुकानों पर कमियाँ पाए जाने पर कारण बताओ नोटिस जारी किए गए हैं।

उप संचालक श्री रणवीर सिंह जाटव ने बताया कि बीते रोज चीनौर स्थित शीतला कृषि सेवा केन्द्र व भदावर एग्रोटेक एवं विकासखंड डबरा के अंतर्गत ऋषिश्वर एग्रोटेक छीमक, पंजाब ट्रेडर्स छीमक, बालाजी किसान सेवा केन्द्र कल्याणी, किसान एग्रोटेक बुजुर्ग रोड डबरा, बालाजी कृषि सेवा केन्द्र डबरा व परम एग्री सीड्स समूदन शामिल हैं। इनमें से जिन खाद-बीज की दुकानों पर कमियां सामने आई हैं उन सभी को बीज नियंत्रण आदेश की विभिन्न धाराओं के तहत कारण बताओ नोटिस जारी किए गए हैं।

नोटिस के जवाब समाधानकारक न पाए जाने पर बीज नियंत्रण आदेश के प्रावधानों के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

कृषक जगत की सदस्यता हेतु संपर्क करें

शैलेन्द्र फरक्या, बलराम एंड ब्रदर्स, पिपलिया मंडी, जिला- मन्दसौर, मो. : 9893189345
सतीशचन्द्र शर्मा, मे. शर्मा एग्रो एजेन्सी, पनवाड़ी, जिला-शाजापुर, मो. : 9893296531
विशाल पाटीदार, मे. गायत्री कृषि एवं बीज भंडार, शुजालपुर मंडी, मो. : 8120700900

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
➩ वार्षिक रु. 600/-
➩ दो वर्ष रु. 1000/-
➩ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** - प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).
नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

"कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम"
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

मालवा-निमाड़ के हजारों किसान सड़कों पर

प्रशासन के आश्वासन पर खत्म हुआ आंदोलन

(दिलीप दसौंधी, कृषक जगत,मंडलेश्वर)। राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ, मालवा-निमाड़ प्रांत के आह्वान पर 1 दिसंबर को खलघाट टोल प्लाज़ा पर धार, बड़वानी, खंडवा और खरगोन जिलों के किसानों ने चार प्रमुख मांगों को लेकर चक्काजाम किया। हजारों किसानों और महिलाओं की मौजूदगी वाले इस आंदोलन में 500 से अधिक वाहन पहुंचे और किसान रात तक डटे रहे। आईटीआई धामनोद में हुई प्रशासन-किसान वार्ता असफल रही। बाद में कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और एसपी से चर्चा के बाद किसानों ने ज्ञापन सौंपा। प्रशासन द्वारा मांगों के समाधान का भरोसा देने पर लगभग 10 घंटे बाद चक्काजाम स्थगित कर दिया गया।

किसानों की मुख्य मांगों में-मक्का, सोयाबीन और कपास की पूर्व घोषणा अनुसार खरीदी,सभी किसानों के लिए कर्जमुक्ति,सभी फसलों की एमएसपी पर गारंटी कानून,गौ माता को 'राष्ट्र माता' का दर्जा,और केंद्र की आयात-निर्यात नीति को किसान हित में संशोधित करना (दलहन, कपास, प्याज़ का निर्यात खोलना) शामिल थीं।

राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ के मध्य प्रान्त के संगठन मंत्री श्री गोपाल पाटीदार ने कृषक जगत को बताया कि अतिवृष्टि, फसल नुकसान, कम दाम, महंगे कृषि इनपुट और बिजली-उर्वरक संकट के कारण किसान सड़क पर उतरने को मजबूर हुए। प्रशासन ने आश्वासन दिया है कि केंद्र से संबंधित मांगों पर क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि दिल्ली में केंद्रीय कृषि मंत्री से चर्चा करेंगे, जबकि राज्य और जिला स्तर की समस्याओं का समाधान स्थानीय स्तर पर किया जाएगा। वहीं इंदौर संभाग के सह मंत्री श्री गौरीशंकर पाटीदार ने कृषक जगत को बताया कि इस वर्ष खरगोन-बड़वानी जिले में अतिवृष्टि से फसलें खराब हो गई, जिसे लेकर प्रशासन और जन प्रतिनिधियों को ज्ञापन देने और कई बार ध्यान आकृष्ट कराने के बाद भी कोई मुआवजा नहीं दिया गया। किसानों की आय तो दुगुनी नहीं हुई, लेकिन कृषि आदान ज़रूर महंगे हो गए। उपज का सही दाम नहीं मिल रहा है। मक्का का बीज 2400 रु खरीदा और मक्का 700 -800 रु क्विंटल बेचनी पड़ रही है। किसान खाद के लिए कतार में लगा है। दिन में 10 घंटे बिजली भी नहीं मिल रही है। इन्हीं सब समस्याओं को देखते हुए किसानों को मजबूरन सड़क पर उतरना पड़ा।

राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ के प्रतिनिधियों से ज्ञापन लेने के बाद कलेक्टर श्री प्रियंक मिश्रा ने मीडिया को बताया कि राज्य स्तर की मांगों का निराकरण राज्य स्तर पर किया जाएगा, जबकि जिला स्तर की समस्याओं का समाधान जिला प्रशासन द्वारा किया जाएगा।

भोपाल में हर शनिवार जैविक बाजार प्रारंभ

भोपाल (कृषक जगत)। बिना रसायनिक उर्वरक के उपयोग से उत्पादित फल, सब्जियां, अनाजों का सेवन मनुष्य स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाता है। इन उत्पादों की उपलब्धता निश्चित स्थान पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला प्रशासन एवं कृषि विभाग ने शहर में प्रत्येक शनिवार को जैविक हाट बाजार लगाने की रुपरेखा तैयार की है। बीते शनिवार को राजधानी के नये शहर में जैविक एवं प्राकृतिक तरीके से उत्पादित फल-सब्जियों के स्टाल लगाए गए। शहरवासियों ने इन उत्पादों की खरीदारी कर किसानों का मनोबल बढ़ाया। जैविक हाट भ्रमण के दौरान संभागायुक्त श्री संजीव सिंह ने कृषकों से चर्चा की एवं जैविक सब्जियों का अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर वरिष्ठ आईएएस अधिकारी श्रीमती जी. व्ही. रश्मि, उपसंचालक कृषि श्रीमती सुमन प्रसाद, उप परियोजना संचालक आत्मा श्री सुरेन्द्र अमरुते सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर की मौजूदगी में सुपर सीडर से सरसों की बोवनी

उमरिया (कृषक जगत)। प्रधानमंत्री धन धान्य योजना के तहत कृषक राजकुमार द्विवेदी तथा जानकी प्रसाद मिश्रा के खेत में गत दिनों सुपर सीडर के माध्यम से सरसों की बोवनी कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन, सीईओ जिला पंचायत की उपस्थिति में की गई। किसान श्री राज कुमार द्विवेदी पिता नरेंद्र द्विवेदी ग्राम चंदिया के खेत में 2.50 एकड़ में से 2 एकड़ में सुपर सीडर मशीन से सरसो कि बोवनी तथा जानकी प्रसाद मिश्रा पिता बृजमोहन प्रसाद मिश्रा ग्राम बड़वारा छोटी पाली विकासखंड करकेली के पास धारित 2.50 एकड़ में से 2 एकड़ में सरसों की बोनी जीरो टिलेज के माध्यम से कराई गई। इस अवसर पर उप संचालक कृषि श्री संग्राम सिंह, श्री आशुतोष अग्रवाल, कृषि विस्तार अधिकारी सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

इनाम पाने का सुनहरा मौका

धान उपार्जन में गड़बड़ी की सूचना पर मिलेगा पुरस्कार

जबलपुर (कृषक जगत)। मप्र शासन द्वारा जबलपुर जिले में 1 दिसंबर 2025 से 20 जनवरी 2026 तक समर्थन मूल्य पर धान उपार्जन किया जाएगा। इस दौरान धान की अवैध खरीद-फरोख्त और बिचौलियों की भूमिका पर रोक लगाने के लिए जिला प्रशासन ने सख्त कदम उठाए हैं। कलेक्टर कार्यालय, जबलपुर ने आम जनता से अपील की है कि यदि कहीं भी बिचौलियों द्वारा किसानों से कम कीमत पर धान खरीदी या अवैध भंडारण की जानकारी मिले तो उसकी तत्काल सूचना दें। सूचना देने वालों को प्रोत्साहित करने के लिए आकर्षक पुरस्कार राशि तय की गई है। पुरस्कार की राशि- 100 से 200 क्विंटल तक धान की सूचना पर रू. 5,000, 200 से 500 क्विंटल तक पर रू. 11,000 तथा 500 क्विंटल से अधिक पर रू. 21,000 का पुरस्कार दिया जाएगा। बिचौलियों से जुड़ी जानकारी, फोटो या वीडियो व्हाट्सएप नंबर 6269113387 और 6269113327 पर भेजी जा सकती है। कलेक्टर श्री राघवेन्द्र सिंह के अनुसार, बिचौलियों के खिलाफ कार्रवाई के लिए अनुविभागीय दंडाधिकारी एवं कार्यपालिक मजिस्ट्रेट को अधिकार दिए गए हैं। उनके निर्देशन में कृषि उपज मंडी समिति एवं कृषि विभाग के अधिकारी कार्रवाई करेंगे।

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र 600 रूपये

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन, मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
NIMADFRESH
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो. :** 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि. ◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि. ◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ ◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया ◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5% अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

इफको की धरती माता बचाओ अभियान में भागीदारी

विदिशा (कृषक जगत)। इफको ने धरती माता बचाओ अभियान के अंतर्गत नैनो उर्वरक उपयोग विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिले के मीडिया सदस्यों ने भाग लेकर नैनो उर्वरक उपयोग तकनीक को समझा। रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी, हवा, पानी एवं मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

सेंट्रल ग्राउंडवाटर बोर्ड के रिपोर्ट के अनुसार विदिशा जिले के भूजल में भी यूरिया के अत्यधिक उपयोग के कारण नाइट्रेट की मात्रा तय सीमा से अधिक है, जिससे कई घातक बीमारियों का खतरा है। संगोष्ठी में उपस्थित इफको के राज्य विपणन प्रबंधक डॉ. डी. के. सोलंकी ने अपने संबोधन में बताया कि किसानों को मिट्टी परीक्षण के आधार पर रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम करके इसके अन्य विकल्प जैसे कि नैनो उर्वरक, जैव उर्वरक एवं जैविक खाद के प्रयोग की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। संगोष्ठी में इफको के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री कुमार मनेन्द्र, जिला विपणन अधिकारी श्रीमती राखी रघुवंशी,सहकारी समिति सेऊ के अध्यक्ष श्री अंशुज शर्मा, जिले के मीडिया सदस्य सहित अन्य अधिकारी एवं कृषक उपस्थित थे।

सहकारिता सप्ताह में कृभको के कार्यक्रम

ग्वालियर (कृषक जगत)। कृषक भारती कोऑपरेटिव लि. (कृभको) ग्वालियर द्वारा सहकारिता सप्ताह के अंतर्गत सहकारिता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त सहकारी संस्थाएं श्री भूपेंद्र सिंह, डॉ. राजीव कुमार उप महाप्रबंधक कृभको भोपाल, श्री अपरेश प्रेमी मंडल प्रबंधक विपणन संघ, उपायुक्त सहकारिता श्री नरेश सिंह, श्री हिमांशु खड़े जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मुख्य कार्यपालन अधिकारी, श्री दीपक हिरानी महाप्रबंधक नागरिक सहकारी बैंक मर्यादित सहित लगभग सहकारी संस्थाओं से जुड़े नागरिक उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन श्री अभिषेक मोदी क्षेत्रीय प्रतिनिधि कृभको ने करते हुए विपणन गतिविधियों एवं कृभको के उत्पाद सिटी कम्पोस्ट, माइकोराइजा, तरल जैव उर्वरक की जानकारी साझा की।

डॉ. राजीव ने सहकारिता का महत्व एवं सहकारिता नीति, यूरिया डीएपी एवं खाद कर छोड़कर मल्टी पर्पस समितियां बनाने के बारे में विस्तार से चर्चा की, साथ ही डीबीटी एवं उससे होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से बताया।

जीएनएफसी ने बताए उर्वरक उपयोग के तरीके

धार (कृषक जगत)। संतुलित उर्वरक उपयोग से फसल लागत को तो कम किया जा सकता है साथ ही भूमि एवं पर्यावरण को भी सुधारा जा सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम मिट्टी/पानी की जांच आवश्यक है। ग्राम कोट भिड़ोता में गुजरात नर्मदा वैली फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल लि., भरूच (गुजरात) के तत्वाधान में पीएम प्रणाम किसान संगोष्ठी के आयोजन में यह बात कृषकों को बताई गई। कंपनी के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री रमेश कुमार राजाणी ने मिट्टी एवं पानी का परीक्षण करवा के विविध फसल में खाद की संतुलित मात्रा उपयोग एवं प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान कर प्रोम, वर्मी कंपोस्ट, नैनो यूरिया, नैनो डीएपी उपयोग करने के तरीके बताए। इस अवसर पर इंदौर क्षेत्र प्रभारी श्री आर. पी. सिंह, विक्रेता उज्ज्वला ट्रेडर्स एवं क्षेत्र के कृषक उपस्थित थे।

एसबीआई जनरल इंश्योरेंस ने

रबी में किसान जागरूकता बढ़ाने फसल बीमा सप्ताह में चलाया अभियान

मुंबई (कृषक जगत)। एसबीआई जनरल इंश्योरेंस, देश की अग्रणी सामान्य बीमा कंपनियों में से एक, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मिलकर प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के तहत आयोजित फसल बीमा सप्ताह में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। इस सप्ताहभर चलने वाले अभियान का उद्देश्य किसानों में फसल बीमा के महत्व के प्रति समझ विकसित करना और उन्हें योजना के प्रावधानों, लाभों और प्रक्रियाओं के बारे में सरल एवं व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध कराना है।

कंपनी द्वारा मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, आंध्र प्रदेश, ओड़िशा, असम और तमिलनाडु के आवंटित जिलों में व्यापक जन-जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं। इनमें फसल बीमा पाठशालाएँ, किसान कार्यशालाएँ, किसान मेले, और विशेष रूप से महिला किसानों के लिए नामांकन-आधारित संवाद कार्यक्रम शामिल हैं।

SBI general INSURANCE
SURAKSHA AUR BHAROSA DONO

किसानों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँच बनाने के लिए एसबीआई जनरल इंश्योरेंस द्वारा डोर-टू-डोर जागरूकता अभियान, स्कूल-कॉलेजों में शिक्षण कार्यक्रम, बाइक रैली, नाव आधारित जनसंपर्क, नुक्कड़ नाटक और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी आयोजित की जाएंगी। गांव, ब्लॉक और जिला स्तर पर होर्डिंग, बैनर, पोस्टर, पंपलेट एवं एफएक्यू सामग्री के वितरण के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

इस पहल पर श्री नवीन चंद्र झा, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एसबीआई जनरल इंश्योरेंस, ने कहा—

'फसल बीमा सप्ताह हमारे लिए किसानों से सीधे जुड़ने, योजना को सरल भाषा में समझाने और उन्हें उपलब्ध सुरक्षा कवच के बारे में जागरूक करने का सशक्त अवसर है। सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर हम यह सुनिश्चित करते हैं कि योजना का नामांकन सुचारु रहे और कार्यान्वयन प्रभावी ढंग से हो।' रबी 2025-26 के किसानों तक योजना के लाभ, प्रावधान और बीमा सुरक्षा की जानकारी अधिकाधिक पहुँचाना इस अभियान का मुख्य लक्ष्य है।

प्रेषक : कृषक जगत
Post Bag No. 37,BHOPAL- 462011
भोपाल, 8 दिसम्बर 2025, Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57
डाक प्रेषण का दिन- सोमवार, मंगलवार

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का निर्देश

सहकारी संस्थाएं किसानों को सशक्त बनाने के लिए हर संभव प्रयास करें

अपेक्स बैंक ने 4.27 करोड़ लाभांश राशि का चेक मुख्यमंत्री को सौंपा

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि किसानों को सशक्त बनाना और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार करना सहकारी संस्थाओं की सर्वोच्च जिम्मेदारी है। उन्होंने निर्देश दिए कि आगामी वर्ष 2026 को प्रदेश में कृषि एवं किसान वर्ष के रूप में भव्य रूप से मनाया जाए। इस दौरान कृषि विपणन सहकारी समितियों को मजबूत बनाने, किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलाने और फसल चक्र के अनुरूप सुविधाएं उपलब्ध कराने पर विशेष फोकस रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रालय में सहकारिता विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग ने अपेक्स बैंक की 4 करोड़ 27 लाख 4 हजार 190 रुपए की अंश पूंजी का लाभांश मुख्यमंत्री को भेंट किया। इस अवसर पर अपेक्स बैंक के प्रबंध संचालक श्री मनोज गुप्ता भी उपस्थित रहे।

सहकारी समितियों के डिजिटल रूपांतरण पर जोर

मुख्यमंत्री ने कहा कि सहकारी समितियों का प्राथमिकता के आधार पर कंप्यूटराईजेशन किया जाए, जिससे किसानों को पारदर्शी एवं त्वरित सेवाएं उपलब्ध हो सकें। समिति पदाधिकारियों के लिए प्रतिवर्ष संपत्ति का वार्षिक विवरण प्रस्तुत करना अनिवार्य किया जाए।

उन्होंने पंचायत स्तर पर पैक्स (PACS) स्थापित करने के निर्देश भी दिए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि सेवाओं की पहुंच और बेहतर हो सके।

सहकार क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां- दो वर्षों का रिपोर्ट कार्ड

बैठक में विभाग द्वारा पिछले दो वर्षों में हासिल की गई उपलब्धियों और नवाचारों का विस्तृत प्रस्तुतिकरण किया गया-

कमजोर सहकारी बैंकों का सुदृढ़ीकरण- राज्य सरकार द्वारा 15 कमजोर जिला सहकारी बैंकों को 50-50 लाख रुपये की अंश पूंजी उपलब्ध कराई गई।

एम-पैक्स का देश में सर्वश्रेष्ठ कंप्यूटराईजेशन- मध्यप्रदेश एम-पैक्स ने कंप्यूटराईजेशन और ऑनलाइन ऑडिट के क्षेत्र में देश में पहला स्थान प्राप्त किया है।

किसानों को खातों की जानकारी SMS के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही है।

किसान हितैषी पहलें

- किसानों से पूसा बासमती धान की खरीद के लिए मैजिस्टिक प्राइवेट लिमिटेड के साथ अनुबंध
- पराली प्रबंधन के लिए विशेष कार्ययोजना
- बीज संघ द्वारा एमपी चीता ब्रांड का लॉन्च
- एम पैक्स, डेयरी, एवं मत्स्य सहकारी समितियों सहित 1,601 नई समितियों का गठन

आगामी तीन वर्षों की कार्ययोजना पर भी विस्तृत चर्चा

बैठक में सहकारिता क्षेत्र की आने वाली चुनौतियों और संसाधनों को ध्यान में रखते हुए तीन वर्ष की कार्ययोजना पर विचार-विमर्श किया गया। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि आगामी वर्षों में सहकार से समृद्धि को मजबूत धरातल पर उतारना सरकार की प्राथमिकता है।

मुख्य बिंदु

- किसानों को सशक्त बनाने सहकारी संस्थाएं करें प्रभावी प्रयास
- वर्ष 2026- कृषि एवं किसान वर्ष
- सहकारी समितियों का तेज़ी से कंप्यूटराईजेशन
- पंचायत स्तर पर अधिक पैक्स स्थापित होंगे
- सहकारी बैंकों को आधुनिक प्रणाली से जोड़ने पर फोकस
- बीज, खाद, ऋण वितरण व्यवस्था में सुधार।

केंद्रीय कृषि मंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की 33वीं बैठक

छोटे किसानों को मिलें ज्यादा से ज्यादा लाभ, उनकी आय भी बढ़े : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में कृषि भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के निदेशक मंडल की 33वीं बैठक आयोजित हुई। बैठक में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री रामनाथ ठाकुर भी उपस्थित थे। फ्लैगशिप कार्यक्रमों की समीक्षा और रणनीति निर्धारण- बैठक में श्री शिवराज सिंह चौहान ने NHB की योजनाओं की समीक्षा की। विशेष रूप से वाणिज्यिक बागवानी विकास योजनाएं, कोल्ड-चेन अवसंरचना परियोजनाएं, क्लस्टर विकास कार्यक्रम (CDP)- क्षेत्र-विशिष्ट बागवानी क्लस्टरों के माध्यम से उत्पादकता और बाजार जुड़ाव को बढ़ाने की नई पहल, क्लीन प्लांट कार्यक्रम-उच्च मूल्य वाली फसलों के लिए रोग-मुक्त पौध सामग्री उपलब्ध कराने के बारे में चर्चा हुई।

श्री चौहान ने निर्देश दिया कि योजनाओं का क्रियान्वयन समयबद्ध, पारदर्शी और किसान-केंद्रित हो तथा किसानों को सब्सिडी भी समय पर दी जाएं, इस संबंध में कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। साथ ही, श्री शिवराज सिंह ने किसानों के हित में, जल्दी खराब होने वाले बागवानी उत्पादों के संबंध में विशेष रणनीति बनाने पर जोर दिया, ताकि इनकी सेल्फ लाइफ बढ़े, किसानों को नुकसान नहीं हो और नुकसान से बचने के लिए अवेयरनेस प्रोग्राम भी चलाए जाएं।

एनएचबी की भूमिका सुदृढ़ करने के लिए मार्गदर्शन- बैठक के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने बागवानी क्षेत्र की उत्पादकता, गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने हेतु कई रणनीतिक सुझाव दिए। बैठक में केंद्रीय कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगीलाल जाट सहित कृषि, विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, बागवानी उद्योग से जुड़े गैर-आधिकारिक सदस्य उपस्थित रहे।